ईश्वर के दलाल

सत्य के दर्शन

लेखक

स्वामी सत्यानंद महाराज 'सत्य'

'सत्य प्रकाशन'

प्रथम संस्करण : 2022

प्रकाशक : सत्य प्रकाशन

Email : rajneeshstya@gmail.com

Youtube Channel : सत्य के दर्शन / Satya Ke Darshan

@सर्वाधिकार : इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी अंश इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटोकापी, रिकार्डिंग या अन्य सूचना संग्रह एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने के पूर्व लेखक की लिखित अनुमति अनिवार्य है |

मूल्य : 100 रूपये

रचना : ईश्वर के दलाल

लेखक : स्वामी सत्यानंद महाराज 'सत्य'

शब्दांकन : रितिक 'सत्य' - रजनीश 'सत्य'

सत्य के दर्शन

अभिमत

संसार भर में बुद्धिजीवी लोगों की संख्या सबसे अधिक है. मगर जब हम भारत वर्ष पर नजर डालते हैं तो बिल्कुल विपरीत स्थिति पाते हैं, वह यह है कि इस देश में अंधविश्वास, धर्मान्धता और धर्मभीरुओं की संख्या सबसे अधिक है. कम से कम टेलीविज़न तो भारत की ऐसी ही छवि पेश करता है. भारत अथवा भारत से बाहर जितने भी अंधविश्वासी हैं. उन सबकी आस्था निर्विवाद रूप से ईश्वर में है. आत्मा, पुनर्जन्म, कर्मफल, वर्णाश्रम जैसी दूसरी चीजें दुसरे नम्बर पर आती हैं, बहुत दुख का विषय है कि आज भारत में 'सत्यहन्ता' यानी 'सच्चाई के कातिल' काबिज हैं और सत्यशोधक अल्पसंख्या में हैं और असहाय हैं. इस सत्यशोधकों में हम एक सच्चे सत्यांवेशी के रूप में स्वामी सत्यानंद जी महाराज को अपने निकट पाते हैं. ये बुद्धिवादी विचारों की दौलत से मालामाल हैं. तर्कशील और वैज्ञानिक सोच उनकी सबसे बड़ी दौलत है. शील-सदाचार का पाठ इनकी सबसे बड़ी पूँजी है. ये इस दौलत और संपत्ति को दोनों हाथों से बाँटने में दिन-रात लगे हैं. जाति-वर्ण की दूषित भावना को धत्ता बताते हुए इन्होंने मानव कल्याण के उदात्त कार्य को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया है.

हमारी मान्यता है कि यदि आज हमें भारत को विश्वशक्ति के रूप में स्थापित करना है तो हमें इस देश को सभी अंधविशवासों से मुक्त करना-कराना होगा. इसी मंगल भावना के साथ सत्यानंद जी महाराज आज बुद्धिवाद और तर्कशील विचारों पर आधारित बहुत

महान आन्दोलन चला रहे हैं. सभी प्रगतिशील और वैज्ञानिक सोच रखने वाले तर्कशील लोगों को स्वामी सत्यानंद जी के इस महान आन्दोलन में न केवल सहयोग करना चाहिए अपितु इस महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हम सभी को हर संभव त्याग के लिए भी सदा तैयार रहना चाहिए.

प्रस्तुत पुस्तक में सम्मिलित तर्क अकाट्य है, वैज्ञानिक आधर पर पुष्ट है, भाषा शैली रोचक है, विचार बहुत मारक हैं तथा उद्देश्य बहुत कल्याणकारी है. काल्पनिक ईश्वर और वास्तविक मानव के बीच कुछ लोग दलालगिरी का कुत्सित काम करके अपना गुजर-बशर करते हैं.

मैं विद्वान् लेखक की इस ऐतिहासिक पुस्तक की सफलता की कमाना करता हूँ .

सधन्यवाद

28-2- 2014 -शांतिस्वरूप बौद्ध

सत्य के खोज

भूमिका

जिज्ञासु जी एक अदभुत प्राणी है! दिन-रात धर्म-दर्शन, मनोविज्ञान, विज्ञान, समाज, साहित्य तथा शास्त्रों के अध्ययन व आत्मा-परमात्मा, पुनर्जन्म-परलोक, ज्योतिष, हस्तरेखा, वास्तु, तन्त्र-मन्त्र-यंत्र भूत-पलित-पिचाश, जिन्न-जिन्नात आदि रहस्यों के चिन्तन-मनन में लगे रहते हैं! आपने सब धर्मों का निष्पक्ष तुलनात्मक अध्ययन किया है! अध्यात्म और परलोकवाद के आप विशेषज्ञ हैं। मुझे जब भी कोई प्रश्न कचोटता है, मैं अपनी जिज्ञासा लेकर जिज्ञासु जी के पास पहुंच जाता हूं। जिज्ञासु जी के अदभुत तर्क मुझे बहुत प्रभावित करते हैं!

जिज्ञासु जी का मानना है कि जब तक इंसान पूर्वाग्रह-दुराग्रह से ग्रस्त है, तब तक उसे सत्य का साक्षात्कार हो ही नहीं सकता! जिज्ञासु जी इस सम्बन्ध में अक्सर कुछ शेर व दोहे सुनाते रहते हैं-

पूर्वाग्रह और दुराग्रह, ज्ञान के दुश्मन दोय ।

दोनों से मुक्ति मिले, तो सत्य के दर्शन होय ॥

जब भी करोगे क्रांति, होंगे दुश्मन चार |

घर समाज नेता गुरु, करते हैं धिक्कार ॥

आओ तुम्हें भी सत्य के, दर्शन में करा दूं।

आंखों से पहले धर्म के, चश्में में उतार दूं ॥

हमारे शहर के आप जाने-माने महापंडित हैं! आपकी विद्वता के सामने जब अच्छे अच्छे पंडित पछाड़ खा जाते हैं! तब सारे शहर में बड़ा हंगामा खड़ा हो जाता है! कोई उन्हें नास्तिक, अधार्मिक, जातिवादी, मार्क्सवादी, वामपंथी, भीमटा, नवबौद्ध, और कोई तो उन्हें विदेशियों का एजेंट तक कह देते हैं! लोग चाहे कुछ भी कहे, जिज्ञासु जी शुद्ध मानवतावादी व बुद्धिवादी हैं। वे नास्तिकता और आस्तिकता से उठकर वास्तविकता को जानने-समझने वाले जीव हैं! वे अपनी पहचान केवल 'सत्यशोधक या वास्तविक' के रूप में चाहते हैं!

जिज्ञासु जी विवादास्पद प्राणी हैं। उनकी हर किताब हंगामेदार होती है। जब भी कोई प्रकाशन होता है, धर्म के कथित ठेकेदार कोर्ट में जाने की धमकी देते हैं। मगर जिज्ञासु जी के तर्कों के सामने उन्हें हर बार मुहंकी खानी पड़ती है।

एक दिन सुबह की सैर पर जिज्ञासु जी से मेरी मुलाकात हो गई! बातों ही बातों में पदार्थ से लेकर परमेश्वर तक की जिज्ञासाओं का मैंने उनके सामने पिटारा खोल दिया! फिर क्या था जिज्ञासु जी ने अपना सारा ज्ञान मुझ पर उड़ेल दिया। मैंने सोचा हमारी इस ज्ञान चर्चा का लाभ देश और दुनिया के भोले-भाले लोगों व कथित बुद्धिजीवियों को भी मिले! यही सोचकर पाठकों की सेवा में हमारी

वार्ता 'ईश्वर के दलाल' के नाम से हाजिर है! कोई जिज्ञासा छूट गई हो तो पाठक अवश्य लिखें, ताकि अगली मुलाकात में उसका भी समाधान हो जाए!

इस वार्ता का प्रकाशन 'सत्य प्रकाशन' ने कर दुनिया के करोड़ों लोगों की जिंदगी में जो ज्ञान रूपी उजाला किया है, वह क्रांति का रूप लेकर हमारे देश व समाज से जाति, अंध-विश्वास तथा साम्प्रदायिकता का सर्वनाश कर दे। इसी आशा और विश्वास के साथ सभी सुभचिंतकों का आभार! धन्यवाद !! साधुवाद !!!

न तोप निकालो, न तेज़ाब निकालो !

न हो जाए जग में क्रान्ति, कोई ऐसी किताब निकालो !!

-लेखक

सत्य प्रकाशन

ईश्वर के दलाल

सुबह-सुबह का वक्त था। मैं अपने कुछ मित्रों के साथ 'सुबह की सैर' पर जा रहा था। सामने से हमारे शहर के एक प्रकांड पंडित जिज्ञासु जी अपने मित्रों के साथ सुबह की सैर से लौट रहे थे। हमने उन्हें सादर प्रणाम किया, उन्होंने पूछा- 'कैसे हो?'

मैंने कहा- 'आपका आशीर्वाद और ईश्वर की असीम कृपा है?"

जिज्ञासु जी बोले- यदि ईश्वर की असीम कृपा होती, तब इस साल अतिवर्षा से हमारे शहर की तबाही न होती? कई लोगों के मकान ढह गए। कई मवेशी बाढ़ में बह गए। लोगों का काम-धंधा चोपट हो गया। जान माल के भारी नुकसान के बाद भी तुम कह रहे हो ईश्वर की असीम कृपा है।

मैंने कहा- जिज्ञासु जी! यदि खड़े-खड़े चर्चा करेंगे तो मजा नहीं आएगा बड़े दिनों के बाद आपके दर्शन हुए हैं, आइए पार्क में पर बैठ कर इस विषय पर विस्तार से चर्चा की जाए ताकि हमारी जिज्ञासाओं को कुछ शांति मिले।

स्थानीय शहीद पार्क में हम आमने-सामने बैठ गए, हमारे और उनके मित्र भी आसपास बैठकर हमारी नोंच-झोंक बड़े ध्यान से सुनने लगे।

मैंने कहा- जिज्ञासु जी! हर कार्य के पीछे ईश्वर का कोई न कोई प्रयोजन होता है। इस तबाही के पीछे भी कोई रहस्य न हो? हो सकता है ईश्वर हमें अपने पापों की सजा दे रहा हो ?

जिज्ञासु जी बोले- यदि हर कार्य के पीछे ईश्वर का कोई न कोई प्रयोजन है, तो चोरी, हत्या, बलात्कार, नशाखोरी, जुआ-सट्टा, हिंसा व अन्य अपराधों के पीछे भी क्या उसका कोई प्रयोजन की कार्य कर रहा है? यदि पापियों को सजा देने के कारण बाढ़, भूकंप, आंधी, तूफान, अतिवृष्टि अल्पवृष्टि होती है? तब फिर इन प्राकृतिक आपदाओं में आप जैसे धार्मिक लोग भी काल के गाल में क्यों समा जाते हैं? क्या हिरोशिमा और नागाशाकी में मरने वाला हर प्राणी पापी था? क्या एक साथ सारा शहर ही पापी हो गया था और जो बच गए थे? क्या वे सब पुण्यवान थे?

मैंने कहा- ईश्वर किसी को मारता नहीं, सब अपने-अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं। हो सकता है मरने वालों की उम्र ही खत्म हो गई हो तब ईश्वर क्या करे?

जिज्ञासु- यदि वह किसी को मारता नहीं, तब जीवन-मृत्यु का सिस्टम उसके हाथ में नहीं है। यदि वह कर्मों के अनुसार फल देता है, तब हमें चोरी, हत्या, बलात्कार की रिपोर्ट थाने में नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह सारे अपराध तो आपके अनुसार हमारे कर्मों का फल हैं। क्या कर्मों के फल के कारण ही भारत दो हजार सालों तक गुलाम रहा?

यदि मरने की उम्र निश्चित है तब फिर हमें किसी की मृत्यु पर आंसू बहाने की जरूरत ही क्या है? फिर तो डॉक्टर के पास जाने की भी जरूरत नहीं, क्योंकि मृत्यु तो उम्र पूरी होने पर ही होगी। हम इलाज कराएं या न कराएं?

मैंने कहा- दवा के साथ दुआ भी जरूरी है?

जिज्ञासु- यदि दवा से इंसान ठीक हो जाए तो फिर दुआ की क्या जरूरत है, यदि दुआ से ही ठीक हो जाए, तब दवा खरीदने पर हम पैसा क्यों खर्च करें? क्यों डॉक्टर का और हमारा समय, पैसा, बुद्धि बरबाद करें? यदि दवा और दुआ एक साथ करेंगे, तब यह कैसे पता चलेगा कि बीमार इंसानी दवा से ठीक हुई है या दुआ से ?

मैंने कहा- इसका मतलब प्रार्थना या दुआ करना व्यर्थ है?

जिज्ञासु- यदि प्रार्थना या दुआ करने से ही सारी समस्याएं हल हो जातीं, तब तो हमारा देश चीन, जापान व अमेरिका को पछाड़ कर ओलंपिक खेलों से सारा सोना बटोर लाता, क्योंकि हमारे देश में खिलाड़ियों के साथ उनके मां-बाप भी प्रेक्टिस पर कम प्रार्थना पर ज्यादा ध्यान लगाते हैं, इसलिए ओलंपिक खेलों में मुंह लटकाए लौट आते हैं। दो हजार सालों से हम प्रार्थनाओं के माध्यम से सुख-शांति, समृद्धि और लंबी आयु मांग रहे हैं। क्या केवल पूजा-पाठ, प्रार्थना और आरती उतारने रटने से ही ये समस्याएं हल हो जाएगी? रूस, चीन,

अमेरिका के नास्तिक लोग दुनिया पर छाए हुए हैं और हम हैं कि अभी भी मंदिर के माईक से गला फाड़ रहे हैं -

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे!

भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे !!

अब इस आरती या प्रार्थना में कुछ भी सच्चाई होती, तब क्या कैलाश पर्वत, मानसरोवर पर चीन और एक तिहाई कश्मीर पर क्या पाकिस्तान कब्जा कर पाता ?

मैंने कहा- हम दिल से प्रार्थना नहीं करते, नहीं तो ईश्वर तो दया का सागर है, हम जो मांगे वही मिल सकता है?

जिज्ञासु- यदि ईश्वर दया का सागर होता, तब भरी जवानी में औरतें विधवाएं न होतीं। तीर्थ स्थलों में नाव पलटने या मंदिर की छत गिरने से लोग काल के गाल में न समाते। उसके नाम पर आयोजित मैलों में भगदड़ से सैकड़ों लोग शहीद न होते। जीवाणुओं और विष्णुओं को पैदा कर ईश्वर मानवजाति को हजारों बीमारियों का शिकार न बनाता, रंगभेद-जातिभेद, भाषाभेद और धर्मभेद के कारण मानव-मानव के खून का प्यासा न बनता? उसकी दया तब कहां जाती है। जब हिंसक पशु अहिंसक पशुओं को बेदर्दी से चीर फाड़कर खा

सत्य का दर्शन

जाते हैं? मंदिर में बलात्कार होने पर भी ईश्वर को दया क्यों नहीं आती ? क्यों वह अताताइयों को अत्याचार करने से रोकता नहीं ?

जहां तक दिल से प्रार्थना करने का सवाल है, हर ईश्वरवादी रो-रोकर, गा-गाकर, चीख-चीखकर या मन ही मन दिल से ही प्रार्थना करता है। फिर भी ईश्वर सुनता ही नहीं या तो वह है नहीं, यदि है तो वह ऊंचा सुनता है उसे अपने कानों का इलाज करवाना चाहिए।

मैंने कहा- जिज्ञासु जी! ईश्वर बेहरा नहीं है, उसके घर देर है, पर अंधेर नहीं है।

जिज्ञासु- देर से भ्रष्टाचार का जन्म होता है यदि ईश्वर ही हर कार्य में देर करेगा, तब फिर उसकी दुनिया के लोग और अधिक देर करेंगे? देर का मतलब ईश्वर या तो आलसी या कामचोर है या उसके स्टाफ में कर्मचारियों की कमी है।

कम से कम ईश्वर को तो समय पर कार्य निपटाने चाहिए या तो उस पर कामों का बोझ ज्यादा हो गया है या वह सुसराल में पड़े-पड़े भगवान विष्णु की तरह आलसी हो गया है। हर जगह असली की जगह नकली माल मिल रहा है। नकली घी, नकली दूध, नकली सामान के साथ अब तो मिठाइयां भी नकली ही आ रही हैं, बिना लेन-देन के कहीं कोई काम ही नहीं होता है। जो सीधे सच्चे हैं, ये पिसा रहे हैं - घिसा रहे हैं। चालाक लोग मालामाल हो रहे हैं? चमचे चाटुकार दिल्ली में बैठे हैं, समाज को सही दिशा देने वालों की आर्थिक हालत खस्ता चल रही है।

मैंने कहा- ईश्वर को सब पता है वह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। वह पापियों की डोर पहले ढीली रखता है और पाप बढ़ने पर कस लेता है।

जिज्ञासु- यदि ईश्वर को सब पता है तो फिर वह संसार को ठीक क्यों नहीं करता ? रंगभेद, जातिभेद, धर्मभेद और भाषाभेद मिटाकर वह समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय पर आधारित, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था विश्व में लागू क्यों नहीं करता ? यदि वह पीड़ित मानवता को देखकर भी उसका उपचार नहीं करता, तब वह निर्दय है। यदि वह जानते हुए भी मानवता की सहायता नहीं करता, तब वह सर्वशक्तिमान नहीं, यदि वह सर्वज्ञ है तब जानबूझकर अंधा, बहरा, गूंगा क्यों बना हुआ है ? यदि उसे कण-कण और पल-पल की खबर है फिर वह जुआ, सट्टा, शराबखोरी, हिंसा, बलात्कार, झूठ, छल-कपट, भ्रष्टाचार, जातीय-साम्प्रदायिक दंगे क्यों नहीं मिटाता ? हो सकता है उसे मानवता की पीड़ित करने में मजा आता हो। ? यदि वह पापियों की डोर ढीली करता है, तब वह भी पाप को बढ़ावा देने में व अत्याचारों में शामिल होने में गर्व महसूस करता है, फिर उसमें और शैतान में अंतर ही क्या है?

मैंने कहा- जिज्ञासु जी ! कुछ विद्वानों का कहना है कि ईश्वर संसार के कार्यों में दखल नहीं देता, किंतु उसे कण-कण और पल-पल की खबर होती है ? वह सातवें या चौबे आसमान में या बैकुंठ में से ही सब नजारे देखता है। मरने के बाद पापियों को नरक में सजा और भक्तों को स्वर्ग में अनंत काल तक मजा देता है।

जिज्ञासु- यदि वह स्वर्ग में बैठा-बैठा सब नजारे देखता है, तब तो वह बहुत ही बुरा काम करता है। भला फिर तो वह रोज करोड़ों पति-पत्नियों के शयनकक्ष में झाक कर 'कामकला' के दृश्यों का आनंद लेता होगा। बाथरूम में नहाती हुई सुंदरियों को नग्न देखना क्या उसे शोभा देता है ? उसके मंदिरों में बलात्कार हो जाते हैं और वह भांग पिए सोया रहता है। पुजारी लोग सदियों को देवदासियों चूसते रहे और भगवान गूंगा बन कर मजे से देखता रहा। शायद ईश्वर को 'कामकला' में ज्यादा ही आनंद आता है, इसी कारण खजुराहो, कोणार्क व पुरी आदि मंदिरों में उसके भक्तों ने बेडरूम के दृश्यों को उकेरा है। शंकर जी तो अपनी मूर्ति के स्थान पर अपने मंदिरों में अपना 'लिंग' ही पुजवाते हैं। शायद भक्त लोग यहीं से 'कामकला' की ट्रेनिंग लेकर जाते हैं, ताकि स्वर्ग में हजारों अप्सराओं को अंनत काल तक तृप्त कर सकें।

मैंने कहा- जिज्ञासु जी आप बात को किधर से किधर घुमा देते हैं, आप तो ईश्वर के पीछे हाथ धोकर ही पढ़ गए हैं। इंसान ईश्वर की सुनता ही कहां है, यदि इंसान उसके बताए रास्ते पर चले तब इतनी मुसिबत ही क्यों पड़े?

जिज्ञासु- ईश्वर का बताया कौना-ता रास्ता है जिस पर इंसान चले?

मैंने कहा- जो शास्त्रों में बताया गया है?

जिज्ञासु- यदि हम शास्त्रों के अनुसार चलें, तब तो कुछ ही दिनों में पागल खाने पहुंच जाएंगे। शास्त्र तो हमें उल्टी शिक्षा देते आए हैं।

मैंने कहा- कैसे ?

जिज्ञासु- शास्त्रों के अनुसार चलने की इंसान दो हजार सालों से कोशिश कर रहा है, कितने लोग इनके अनुसार चल पाए हैं? स्पष्ट है कि शास्त्र 'आउट ऑफ डेट' हो चुके हैं। या मानव के लिए आज के युग में व्यावहारिक नहीं है और यदि हर शास्त्र ईश्वर की वाणी है, तब शास्त्रों में परस्पर विरोध क्यों है? कोई शास्त्र पशुबलि को पुण्य तो कोई पाप क्यों बतलाता है ? कोई मूर्तिपूजा को पाप तो कोई पुण्य क्यों बताता है ? शास्त्र तो छुआछूत, दहेज, जाति प्रथा, नियोग, हलाला, देवदासी, ऊंचनीच, सतीप्रथा, बाल-विवाह, विधवाओं पर अत्याचार, नरबलि व पशुबलि आदि सभी अमानवीय प्रथाओं को ईश्वर वाणी के नाम पर उचित ठहराते हैं। यदि आज हम ईश्वरवाणी की आड़ में इन कथित धार्मिक प्रथाओं का अनुकरण करें, तब सरकार हमें पकड़कर हवालात की हवा खिलवाएगी। वहां 'ईश्वर के दलाल' भी हमें जमानत नहीं दिलवा पाएंगे।

मैंने कहा- यानि आप पाप-पुण्य को नहीं मानते हैं?

जिज्ञासु जी- पाप-पुण्य के विचार अलग-अलग संस्कृतियों में अलग-अलग होते हैं, कहीं चचेरे, ममेरे, फुफेरे, मौसेरे भाई-बहनों की शादियों को पुण्य, धार्मिक कार्य या कानूनी मान्यता होती है। जैसे-दक्षिण भारत के हिंदुओं और सारी दुनिया के मुसलमानों में यह प्रचलित रिवाज धर्म सम्मत हैं किंतु हम उत्तर भारतीय हिंदुओं के लिए यह घोर पाप है, गैर मुस्लिमों के लिए सुअर खाना पुण्य है, मुस्लिमों के लिए उसका

नाम लेना भी पाप है। प्राचीन भारत में हमारे पूर्वज गायों को यज्ञों में भून-भूनकर खाया करते थे, आज हम ऐसा करना घोर पाप समझते हैं, किंतु सारी दुनिया गाय खाकर चांद और मंगल की यात्रा कर मंगल कर रही है। देश काल परिस्थिति एवं संस्कृति के अनुसार पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, कानूनी, गैर-कानूनी कार्य होते हैं, अतः इनकी स्थायी परिभाषा करना असंभव है। मेरे अनुसार तो बुद्ध के पंचशील अनुसार आचरण करना, पुण्य और उनके विरुद्ध चलना पाप है।

मैंने कहा- संसार में इतनी अव्यवस्था का कारण पिछले जन्मों के कर्म हैं। जिन लोगों ने पाप किए थे, वे उसकी सजा 84 लाख योनियों में भटक कर भोग रहे हैं ? सब कुछ कर्म के हिसाब से चलता है। आपका ईश्वर को दोष देना ठीक नहीं है |

जिज्ञासु- यदि ईश्वर कर्मों के अनुसार सबको भटकाकर मजे ले रहा है, तब बताओ कि सृष्टि के प्रारंभ में जब किसी का कोई कर्म ही नहीं था ? फिर ईश्वर ने 84 लाख योनियों में व्यर्थ ही आत्माओं का निर्माणकर भटकने-भटकाने का मायाजाल क्यों रचा?

मैंने कहा- आपके अनुसार पुनर्जन्म भी झूठ है और शायद आप आत्मा को भी नहीं मानते हो?

जिज्ञासु- मेरे मानने या न मानने से कोई चीज झूठ हो तो सही और सही हो तो झूठ नहीं हो जाती है । सृष्टि की रचना नहीं, विकास

हुआ है। हम सबके जीवन का निर्माण भौतिक पदार्थों में रासायनिक परिर्वतन के कारण लाखों सालों के संघर्ष के परिणाम स्वरूप हुआ है। 84 लाख योनियों की बातें बकवास है। ब्रह्मांड में करोड़ों प्रकार के जीव बनते और नष्ट होते रहते हैं, जो जीव प्रकृति से अनुकूलन या सामजस्य बिठा लेते हैं वे जीवित रहते हैं बाकि नष्ट हो जाते हैं यदि 84 लाख योनियों की बात सही होती तब 'मेमथ और डायनासोर' की योनियां क्यों नष्ट हो गई ?

जीव विकास के अनुसार जीवन की ईकाई 'कोशिका' है न कि 'आत्मा' और 'कोशिका' का निर्माण कार्बन, हाइड्रोजन, आक्सिजन, फास्फोरस, नाइट्रोजन व सल्फर के मिलन से हुआ है। अब तो कृत्रिम कोशिकाओं एवं कृत्रिम खून का निर्माण भी वैज्ञानिकों ने कर लिया है। अमेरिका के महान वैज्ञानिक मिल्लर ने 1953 में कृत्रिम न्यूकलिक एसिड या प्रोटीन और हमारे देश के महान वैज्ञानिक हरगोविंदलाल खुराना ने प्रयोगशाला में सन 1972 में कृत्रिम डी.एन.ए. भी बना लिया है, इसी खोज के कारण आप दोनों को दुनिया का सबसे बड़ा पुरस्कार 'नोबल पुरस्कार' मिला था।' क्लोनिंग पद्धति' द्वारा इंसान अपना प्रतिरूप बनाने में सफल हो गया है, दुनिया कहां से कहां पहुंच गई और तुम अभी भी 'आत्मा और पुनर्जन्म' में उलझे हुए हो। जब शरीर में आत्मा है ही नहीं, फिर पुनर्जन्म का सवाल ही नहीं उठता।

मैंने कहा- यदि पुनर्जन्म झूठ होता, तब टी.वी. पर पिछले 'जन्म का रहस्य', कार्यक्रम में लोग अपने पिछले जन्मों के राज कैसे बता देते हैं?

जिज्ञासु- सदियों के कुसंस्कारों के कारण हम बच्चों को, गर्भवती माताओं को, भूतप्रेत, पुनर्जन्म व आत्मा-परमात्मा की कहानियों को सुनाते रहते हैं। उनके दुष्परिणाम स्वरूप या प्रसिद्धि के चक्कर में लोग बच्चों को सिखा-पढ़ाकर अफवाह फैलाते हैं। यदि पुनर्जन्म होता, तब अरब देशों में एक भी ऐसी घटना क्यों नहीं घटती है ? कोई इंसान यह क्यों नहीं कहता कि मैं पिछले जन्म में गधा, सुअर, सांप-बिच्छू या उल्लू था ? क्या सब लोग पिछले जन्म में इंसान ही थे ? फिर शास्त्रों के अनुसार 84 लाख योनियों में चक्कर काटने के बाद इंसान की योनि प्राप्त होती है।

क्या पुनर्जन्म वाले सारे ही दूध के धुले थे। जो ईश्वर अपना नियम तोड़कर इन्हें फिर हर बार इंसान के रूप में टपकाता है ?

मैंने कहा- यदि आत्मा नहीं होती तो फिर तांत्रिक या ओझा लोग किसी इंसान को लगी प्रेत आत्मा या भूत को झाड़ फूंक कर कैसे निकाल देते हैं ? और मरीज ठीक भी हो जाता है। कई तांत्रिक पानी में आग लगा देते हैं, क्या तंत्र, मंत्र, यंत्र द्वारा शत्रु को मारना दैवीय शक्ति के चमत्कार नहीं है ?

जिज्ञासु - अरे भोले भाई! शरीर की तरह मन भी बीमार होता है, हमारे दिमाग में चार सौ प्रकार की बीमारियां होती हैं, जिनका इलाज मनोवैज्ञानिक डॉक्टर करते हैं। जहां मनोवैज्ञानिक डॉक्टर नहीं होते, वहां तांत्रिक-मांत्रिक लोग गंडा-ताबिज या अन्य पाखंडों के माध्यम से मरीज और उसके परिवार को ठगते हैं। यदि कोई ठीक हो जाए तो समझो अंधे के हाथ बटेर लग गई और नहीं हुआ तो तांत्रिक कई बहाने गढ़ने में माहिर होते ही हैं। भूत-पलीत जिन-जिन्नात सब मन के बहम हैं, भ्रम हैं। मैं बचपन से भूत ढूंढ रहा हूं, मुझे आज तक कोई भूत नहीं मिला। तंत्र-मंत्र-यंत्र में जरा भी शक्ति होती तो हमारा देश दो हजार सालों तक विदेशी हमलों का शिकार न बनता। वशीकरण मंत्र से दुनिया की सारी सुंदरियां तांत्रिकों के पैर न दबाती। तंत्र-मंत्र-यंत्र में दैवीय शक्ति नहीं रसायन विज्ञान की कुछ क्रियाएं होती हैं, जिन्हें सीखकर तांत्रिक लोगों को उल्लू बना कर अपना अल्लू सीधा करते रहते हैं। जिन्हें ये पाखंडी लोग सिद्धियां या चमत्कार कहते हैं, ये सब हाथ की सफाई के अलावा कुछ नहीं हैं।

मैंने कहा- यदि तंत्र-मंत्र-यंत्र झूठ होते तो सांप या बिच्छू के काटने पर तांत्रिक लोग मंत्र शक्ति द्वारा इंसान को कैसे बचा सकते थे ?

जिज्ञासु- संसार के केवल तीन प्रतिशत सांप की जहरीले होते हैं, इंसान सांप काटने से कम उसके डर से ज्यादा मरते हैं। सांप काटने पर लोग घबरा जाते हैं और तांत्रिक या ओझा के पास ले जाते हैं, वह कई प्रकार के ढोंग रचता है। यदि सांप जहरीला नहीं होता, तो 2-4 घंटों में

मरीज स्वभाविक रूप से ठीक हो जाता है, इसे वह पाखंडी अपनी मंत्र शक्ति का चमत्कार कहता है। यदि नहीं बचे तो कहता है- “भाई तुमने लाने में देर कर दी, जब ईश्वर ने ही बुला लिया, तो मैं क्या कर सकता हूं ?" सांप के समान ही बिच्छू की लीला समझो। नाग-नागिन फिल्मों में जो नागों या इच्छाधारी सांपों के चमत्कार बतलाए जाते हैं, वे तब कहां चले जाते हैं, जब ‘डिस्कवरी चैनल’ पर ‘मैन बर्सेस वाइल्ड’ में ‘बीयर ग्रिल्स ’ एवं ‘मैन वुमन एंड वाईल्ड’ में ‘रूथ व माइक’ सांपों और बिच्छूओं को कच्चा ही चबा जाते हैं, इनकी आत्माएं चीन वालों क्यों नहीं लगती हैं जहां हजारों होटलों में सांप परोसे जाते है?

मैंने कहा- तंत्र-मंत्र-यंत्र चाहे झूठ हो किंतु ज्योतिष शास्त्र तो सच्चा है? देखो ! बच्चे के जन्म के समय ही उसके जीवन की लीला को ज्योतिषी ‘जन्मकुंडली या जन्मपत्री’ के माध्यम से बता देता है, सूर्यग्रहण-चंद्रग्रहण कब होगा ? यह भी अपनी अलौकिक शक्ति के माध्यम से पहले ही बात देता है, साढ़े साती या मांगलिक दोषों या कालसर्प योग का निवारण कर लोगों का भला करता है ? बारह राशियों के माध्यम से ज्योतिषी सब कुछ जान लेता है।

यदि अलौकिक शक्ति नहीं होती तो क्या ज्योतिष अभी तक टिका रहता ? अब तो विश्वविद्यायलयों में ज्योतिष शास्त्र की पढ़ाई को सरकार ने भी स्वीकार कर लिया है। क्या यह सब झूठ है?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई जिसे तुम जन्मकुंडली कहते तो वह भ्रमकुंडली है, सारा फलित ज्योतिष छलित ज्योतिष है। सूर्यग्रहण-चन्द्रग्रहण, दिनों

व सालों की गणना गणित ज्योतिष का कमाल है न कि फलित ज्योतिष का। जिन नौ ग्रहों पर फलित ज्योतिष का हवा महल खड़ा है, जब नौ ग्रह ही नहीं हैं तो फिर फलित ज्योतिष सच्चा कैसे हो सकता है? देखो ! सूर्य ग्रह नहीं तारा है, चंद्रमा ग्रह, नहीं उपग्रह है। राहू-केतु का कहीं कोई अस्तित्व ही नहीं है। ज्योतिषियों ने जन्मकुंडली में पृथ्वी को लिया ही नहीं है, जिसका हमारे जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। स्पष्ट है कि ज्योतिषी लोग मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र, शनि आदि पांच ग्रहों के माध्यम से सबको बेवकूफ बना रहे हैं? जिस चांद पर अमेरिका का महान वैज्ञानिक नील आर्मस्ट्रांग 21 जुलाई, 1969 को जूतों समेत उतर गया, उसको हमारा भोला-भाला समाज अभी भी पूज रहा है। पढ़ी-लिखी महिलाएं भी उससे अपने पति की उम्र लंबी करने की प्रार्थनाए कर रही हैं? हाय रे अज्ञान!

मंगल पर 'नासा' रोबोट उतर चुका है, शनि गैसों का गोला है। भला करोड़ों-अरबों किलोमिटर दूर स्थित इन ग्रहों को हमारे जीवन से क्या लेना-देना है ? हमें मांगलिक दोष, साढ़े साती या काल सर्पदोष सता रहा है ? और नासा के वैज्ञानिक ग्रहों की छाती पर रोबोट गाड़ियों चला रहे हैं। जिन बारह राशियों के चक्कर में तुम पड़े हो, वे सब फर्जी हैं, आकाश में तारों के झुंडों को देखकर ज्योतिषयों ने मीन, कुंभ, तुला आदि राशियों की कल्पना कर ली थी। आकाश में न मछली है न मटका ! फिर भी हमें दिन-रात लगा रहता है उन्हीं का खटका [चिंता] !! जो है ही नहीं, हम उनसे भी डरे हुए हैं, हाय रे अज्ञान! जहाँ तक सरकार का सवाल है तो सरकार तो विश्वविद्यालयों के साहित्य

में कई काल्पनिक कविताओं-कहानियों एवं उपन्यासों को भी पढ़वाती है, ऐसे में क्या तुम उन्हें भी सच मान लोगे ?

मैंने कहा- ग्रहों का कुछ न कुछ तो सूक्ष्म प्रभाव पड़ता होगा ?

जिज्ञासु- सूर्य की गर्मी का प्रभाव अमीर-गरीब, काले-गोर, हिंदू-मुस्लिम, आस्तिक-नास्तिक आदि सभी पर समान रूप से पड़ता है, क्या ऐसा हो सकता है कि जून की गर्मी में जिसकी राशि में सूर्य प्रसन्न चल रहा हो उसे नंगा धूप में खड़ा कर दिया जाए, तब क्या वह ठंडा-ठंडा कूल-कूल महसूस करेगा ? या जिस पर चंद्रमा की कृपा दृष्टि चल रही है उसे जनवरी या पूस की ठंडी रात में रातभर खुले में नंगा खड़ाकर दिया जाए, तब क्या उसे ठंड नहीं लगेगी ? ग्रहों का प्रभाव व्यक्ति विशेष पर नहीं सामूहिक रूप से पड़ता है। किंतु हमारे लाभ-हानि, जन्म-मृत्यु, शादी-सगाई, सुख-दुख, रोग-निरोग या गृहप्रवेश का ग्रह-नक्षत्रों से कुछ भी लेना-देना नहीं है। क्या ज्योतिषी ग्रह-नक्षत्रों के दलाल हैं ? तब बताइए क्या वे अपनी बेटियों या पत्नियों की जन्मकुंडलियां देखकर उनके शादी के पहले या शादी के बाद के प्रेमियों की संख्या बता सकते हैं ?

सारे ग्रह-नक्षत्र राशि आदि पाखंडों को मिलाने के बाद भी ज्योतिषियों की बेटियां विधवा क्यों हो जाती हैं ? जिस प्रकार फलित ज्योतिष हमारा भ्रम है, उसी प्रकार आत्मा है ही नहीं, फिर भी हमारा भोला-भाला समाज उसके भ्रम में भ्रमित होकर भोरों की तरह पाखंडी गुरुओं के पीछे आत्मा की तलाश में भटक रहा है।

मैंने कहा- गीता के अनुसार आत्मा अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है, शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता। (20/2 गीता) इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकती (23/2 गीता) क्या यह भगवान श्रीकृष्णजी की वाणी भी झूठ है ?

जिज्ञासु- यदि आत्मा को अजन्मा कहें तो वह पदार्थ या ऊर्जा हो जाएगी, यदि वह ऊर्जा है तब वह अजीवित हो जाएगी और अजीवित होकर वह शरीर का संचालन कैसे कर सकती है ? यदि वह नित्य है, फिर शरीर के द्वारा किए गए कर्मों के अनुसार वह भटकती क्यों है ? सुख-दुख भोगती क्यों है ? एक ओर उसे निर्लेप कहते हो, दूसरी ओर उसे नित्य भी कहते हो, दोनों में से एक बात अवश्य झूठ है। आत्मा को या तो सनातन माना जा सकता है या पुरातन, यहां भी दोनों में से एक बात अवश्य गलत है ? यदि शस्त्र के काटने से आत्मा नहीं कटती, तब इंसान गला कटने या अधिक खून बहने पर इंसान मर क्यों जाता है ? केंचुए के दो टुकड़े करने पर भी वह जीवित क्यों रहता है ? बेशरम या गुलाब की कलमों के हजारों पौधे कैसे बन जाते हैं ? जेलीफिस के हजारों टुकड़े करने पर भी हर टुकड़ा जेलीफिस कैसे बन जाता है ? यदि उसे वायु नहीं सुखा सकती, फिर वह आक्सिजन के अभाव में शरीर छोड़कर भाग क्यों जाती है ? यदि उसे आग नहीं जला सकती,तो फिर करंट लगने से इंसान मर क्यों जाता है ! यदि उसे पानी गीला नहीं कर सकता है तो फिर इंसान के पानी में डूबते ही वह नौ दो ग्यारह क्यों हो जाती है ? अरे भाई ! किसी अज्ञात

दार्शनिक कवि ने श्रीकृष्ण-अर्जुन सवांद की आड़ में घर बैठकर गीता की रचना कर उसे महाभारत में घुसेड़ दिया था। जिसे तुम भगवान की वाणी समझकर ढो रहे हो, वह किसी पंडे-पुरोहित की चालाक खोपड़ी का कमाल है।

मैंने कहा- कुछ लोगों का कहना है कि अमेरिका के वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में एक मरणासन्न इंसान को कांच की एक पेटी या कमरे में बंद कर दिया था और जब वह मरा, तब कांच अपने आप चिटक गया और आत्मा भाग गई। क्या यह भी झूठ है?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! यह सब भोले लोगों को बहकाने की अफवाएं हैं। इन्हें कम से कम उस प्रयोगशाला का पता तो बताना चाहिए, ताकि हम भी असलियत का पता कर सकें। वैसे कांच की एक शीशी में तुम भी कुछ चींटियां बंद कर यह कथित अमरिकन प्रयोग दोहरा सकते हो। कुछ पाखंडियों ने तो कथित आत्मा के फोटो खींचने का दावा कर कई आध्यात्मवादियों को ठगा भी है, किंतु महान वैज्ञानिक महर्षि डॉ. अब्राहम टी. कोवूर की चुनौतियों के सामने उन पाखंडियों की एक न चली।

मैंने कहा- यदि आत्मा नहीं है तो फिर दिमाग के सोने पर भी सपने कौन देखता है ? हमारे दिल की धड़कन, सांस व पाचन तंत्र आदि को कौन चलाता है ?

जिज्ञासु- हमारा दिमाग न्यूरोंस कोशिकाओं से बना है। हमारे दिमाग के दो हिस्से होते हैं-एक चेतन और एक अवचेतन! चेतन दिमाग हमारी विवेक बुद्धि द्वारा जाग्रत अवस्था में निर्णय लेता है। जबकि अवचेतन दिमाग हमारे सोने पर या बिना सोए भी अपने शरीर की मूलभूत क्रियाओं पर नियंत्रण करता है। जागृत अवस्था की वासनाएं या कामनाएं ही अवचेतन मन में भूत, भविष्य या वर्तमान की घटनाएं स्वप्न के रूप में दिखाई देती हैं। प्राचीन काल में लोगों को 'दिमाग या मन' के विज्ञान का ज्ञान नहीं था। अतः अपनी कमअकली से वे आत्मा की कल्पना कर बैठे ? जैसे-आज भी कमअकल लोग आंधी-तूफान या बाढ़-भूकंप को ईश्वर की नाराजगी समझकर उसके दलालों को भेंट पूजा चढ़ाते रहते हैं?

मैंने कहा- यदि शरीर की सारी गतिविधियों को दिमाग नियंत्रित करता है तो बताइए दिमाग को कौन नियंत्रित करता है ? क्या वह आत्मा नहीं है ?

जिज्ञासु - अरे भोले भाई! दिमाग की न्यूरोंस कोशिकाएं स्वचालित हैं, उन्हें आक्सिजन से शक्ति मिलती है, जब उन्हें आक्सीजन मिलना बंद हो जाती है, तब वे अपना काम करना बंद कर देती हैं इसी को हम मृत्यु कहते हैं।

मैंने कहा- यदि आत्मा-परमात्मा और पुनर्जन्म नहीं है तो फिर इस सृष्टि को किसने बनाया और इसे कौन चला रहा है?

जिज्ञासु- इस ब्रह्मांड को किसी ने बनाया नहीं, इसका विकास हुआ है। संसार पदार्थ से बना है। पदार्थ का ऊर्जा में और ऊर्जा का पदार्थ में रुपांतरण परमाणुओं की स्वचालित शक्ति द्वारा होता रहता है। यह सारा ब्रह्मांड क्षण-क्षण बदल रहा है, इसमें कुछ भी स्थिर नहीं है, सब कुछ परिवर्तनशील और गतिशील है। **गुरुत्वाकर्षण बल, विद्युतचुंबकीय बल, कमजोर वा ताकतवर नाभिकीय बलों द्वारा यह संसार क्षण-क्षण परिवर्तनशील है। इन्हीं शक्तियों से ब्रह्मांड में विकास और विनाश की प्रक्रिया सतत या प्रतिक्षण चलती रहती है।** संसार का संचालन प्राकृतिक नियमों पर आधारित है कमअक्ल लोग इसे 'ईश्वर की लीला या माया' समझकर खुद उल्लू बने हुए हैं और दूसरों को उल्लू बना कर, अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं।

मैंने कहा- यदि संसार का संचालन प्राकृतिक नियमों पर आधारित है, तब इन नियमों को बनाने वाला भी तो कोई होगा, उसी को हम ईश्वर मानते हैं?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! तुम्हें कैसे समझाऊँ कि प्राकृतिक नियमों का कोई निर्माता नहीं होता है। प्राकृतिक नियम, प्रकृति के स्वभाविक गुण हैं। जैसे-जवान लड़के-लड़कियां एक-दूसरे के प्रति स्वभाविक रूप से आकर्षित होते हैं, यह नियम किसी ने बनाया नहीं है, यह प्राकृतिक या स्वाभाविक है। समाज की व्यवस्था के लिए हमने सगाई-शादी आदि के नियम बनाए हैं। चूंकि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक नियम इंसान स्वयं बनाता है। अतः उसने इसी अनुमान

द्वारा प्राकृतिक नियमों के कर्ता की कल्पना कर ली, उसी को तुम भ्रमवश ईश्वर कह रहे हो ?

मैंने कहा- हर कार्य का कारण और कर्ता होता है। यदि हम संसार को कार्य और ईश्वर को उसका कारण या कर्ता मान ले तो हमारा क्या बिगड़ जाएगा ?

जिज्ञासु- संसार को कार्य मानना मूर्खता है, संसार क्षण-क्षण बदल रहा है। अतः कार्य हुआ ही नहीं लगातार चल रहा है और अनंतकाल तक चलता रहेगा, क्योंकि पदार्थ में स्वतः परिवर्तन का प्राकृतिक गुण है। पदार्थ की स्वचालित प्रकृति को न समझ पाने के कारण ही मानव ने ईश्वर की कल्पना की है।

पदार्थ को निष्क्रिय मानना भौतिक, रसायन या परमाणु विज्ञान के अज्ञान का परिणाम है। 'चेतना' भौतिक पदार्थों में स्वचालित रसायनिक क्रियाओं का परिणाम है। अतः ईश्वर को न कर्ता माना जा सकता है न कारण। हर कार्य का ईश्वर को कारण या कर्ता मानने से ही प्राचीन काल में भौतिक, रसायन, जीवविज्ञान और मनोविज्ञान की उन्नति नहीं हो पाई थी। हर घटना के पीछे ईश्वर का हाथ है, यही सोच कर उसके भक्त हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे हैं और संसार को नारकीय बना बैठे। यदि हर कार्य का एक कारण व एक कर्ता होता है फिर ईश्वर रूपी कार्य का कारण व कर्ता कौन है?

मैंने कहा- महर्षि दयानंद जी के अनुसार कर्ता का कर्ता व कारण का कारण नहीं होता, इसीलिए ईश्वर का न कोई कर्ता न कारण है। वह सबके कारणों का कारण अर्थात आदि कारण व आदि कर्ता है।

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! कर्ता का भी कर्ता होता है जैसे-हम अपने बेटे के बाप हैं, तब क्या हमारा कोई बाप नहीं है? क्या हम अपने बेटे से यह कहने लग जाएं कि मैं कारणों का कारण या बापों का बाप हूं? जैसे-कोई पेंटर कोई चित्र बनाकर यह कहे कि मैं चित्र का आदि कारण या स्वयंभू हूं, मेरा न कोई बाप है न दादा-परदादा, तब आप उसे अकल का दुश्मन नहीं तो क्या कहोगे ?

मैंने कहा- जैसे चित्र बनाने के लिए रंग-उपदान कारण, चित्रकार-निमित्त कारण व देश-काल, परिस्थितियाँ साधारण कारण न हों तो चित्र नहीं बन सकता है ? इसी प्रकार आप संसार का निमित्त कारण ईश्वर व उपदान कारण प्रकृति या पदार्थ तथा साधारण कारण कर्मों का फल क्यों नहीं मानते हो ?

जिज्ञासु- अरे भोले बाबा! संसार के चित्रों को देखकर चित्रकार को निमित्त कारण मानना ठीक है ? किंतु सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम दिशा में या प्राकृतिक स्थलों पर बने सुंदर दृश्यों को देखकर अदृश्य चित्रकार की कल्पना करना मूर्खता है ? क्योंकि प्राकृति कार्यों (चित्रों) की कर्ता (चित्रकार) स्वयं प्रकृति है न कि ईश्वर, प्रकृति ही उपादान- निमित्त व साधारण कारण है।

मैंने कहा- महर्षि गौतम के अनुसार जैसे मटके को देखकर कुम्हार का व स्पीनोजा के अनुसार जैसे घड़ी को देखकर, घड़ीसाज का पता चलता है, इसी प्रकार इस बने बनाए संसार को देखकर हमें ईश्वर का अनुमान क्यों नहीं लगाना चाहिए ?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! यदि मटके को देखकर कुम्हार का पता चलता है, तब क्या कुम्हार को देखकर उसके बाप के बाप का पता-ठिकाना भी चलना चाहिए या नहीं ? और क्या घड़ीसाज अपने आप पैदा हो गया या उसके भी कोई मां-बाप होंगे या नहीं? या वह आसमान से अपने आप टपक पड़ा होगा ? यदि हमारा कहना ठीक है, तब फिर ईश्वर का बाप कौन होगा ? फिर उसके बाप का बाप कौन होगा ? यदि ईश्वर स्वयंभू है, तब प्रकृति को स्वयंभू मानने से हमारे बाप का क्या बिगड़े जाएगा ?

मैंने कहा- जिज्ञासु जी! आपके तर्क लाजवाब है। हम जैसे आस्तिकों की भी आप चूलें हिला देते हैं ? किंतु हम देखते हैं कि सारे संसार में एक गणितीय व्यवस्था है। समय पर सूर्योदय-सूर्यास्त का होना, ऋतुचक्र, चांद का घटना-बढ़ना। क्या यह व्यवस्था अपने आप हो गई है या किसी बुद्धिमान व्यवस्थापक (ईश्वर) का कमाल है ?

सत्य की खोज

जिज्ञासु- संसार में व्यवस्था प्राकृतिक कारणों से है, न कि किसी की बुद्धिमानी का कमाल है ? व्यवस्था से व्यवस्थापक का और कार्य से कारण का अनुमान लगाना स्वभाविक है, किंतु कार्य दो प्रकार के होते हैं-एक मानवीय कार्य, दूसरे प्राकृतिक कार्य। मानवीय कार्य का कारण मानव है। जैसे टेबल को देखकर सुतार का अनुमान लगाना ठीक है, किंतु जंगल में उगे पेड़ों को देखकर उनके निर्माता का अनुमान ठीक नहीं है, क्योंकि पेड़ जीव विकास का परिणाम है न कि किसी ईश्वर का ? ऋतुचक्र पृथ्वी के घूमने के कारण है। चांद न तो घटता है न बढ़ता है, वह हमें पृथ्वी के चक्कर लगाने या घूमने के कारण ऐसा दिखाई देता है। सूर्यास्त एवं सूर्योदय हर क्षण पृथ्वी पर अलग-अलग स्थानों पर होता रहता है। जैसे नार्वे देश में आधी रात को सूर्य दिखाई देता है। जिसे MidNight Sun कहते हैं। या दक्षिणी और उत्तरी ध्रुव पर छः महीने का दिन और छः महीने की रात होती है। उसे कोई जाकर आज भी देख-परख सकता है।

मैंने कहा- महर्षि दयानंद जी के अनुसार मनुष्य कर्म करता है, उसका फल अपने आप नहीं टपक पड़ता, इसीलिए फलदाता के रूप में ईश्वर का होना जरूरी है।

जिज्ञासु- अरे भाई! कर्म का फल उसी के साथ गुथा या लगा होता है, जैसे-गुलाबजामुन को जुबान पर रखने पर तुरंत उसका स्वाद आने लग जाता है। इसी तरह कई कार्यों के परिणाम तुरंत सामने आ जाते हैं, किंतु कई कार्यों के परिणाम बड़ी देर से सामने आते हैं या आते ही

नहीं हैं, ऐसे में मनुष्य ने फल दाता के रूप में काल्पनिक ईश्वर को मान लिया। जैसे-किसान बड़ी मेहनत से फसल की बुआई निंदाई, सिंचाई करता है किंतु अतिवर्षा, अल्पवर्षा, जाड़ा-पाला, आंधी-तूफान आदि प्राकृतिक कारणों से उसके किए कराए पर पानी फिर जाता है। ऐसे में वह निराश होकर कहता है-कर्म करना इंसान के हाथ में है, फल देना या न देना परमात्मा की मर्जी। किंतु सरदार भगतसिंह ने क्या खूब कहा है- **“कर्म करना इंसान के हाथ में है और उसका फल मिलना या न मिलना परिस्थितियों पर निर्भर करता है।"**

मैंने कहा- आपके अनुसार तो कर्मफल का सिद्धांत अर्थात जैसा बोओगे वैसा काटोगे! शायद यह भी झूठ ही है ?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! किसान बोता है बीज, किंतु काटता है फसल प्राचीन काल में इंसान ने फसलचक्र-ॠतुचक्र को देखकर कर्मफल सिद्धांत की कल्पना कर ली थी। उसे हम आज तक ढो रहे हैं। कर्मफल परिणाम का सिद्धांत अनिश्चित है। यह आंशिक रूप से सत्य है न कि पूर्णरूप से! इंसान के अच्छे कार्य का बुरा फल या बुरे कार्य का अच्छा फल भी मिल सकता है। जैसे-डॉक्टर का इंजेक्शन फैल होना या कभी-कभी व्यभिचार से भी अच्छी संतान पैदा होना। अधिक कार्य का कम फल और कम कार्य का अधिक फल भी मिल सकता है !अच्छे कार्य का बुरा और या बुरे कार्य का अच्छा फल भी मिल सकता है। जैसे-मजदूरों को कम व मालिकों को हमेशा अधिक लाभ मिलना। एक समय किए गए कार्यो का अनंत काल तक व एक

पीढ़ी के कार्यों का फल कई पीढ़ियों को सुखद या दुखद परिणाम के रूप में मिल सकता है। जैसे-भारतीय राजनीति में गांधी-नेहरू परिवार को मिल रहा है।

यह कहना पूरी तरह बकवास है कि इंसान अपने-अपने कर्मों का फल भोगते हैं, इंसान का जीवन व्यक्तिगत एवं सामूहिक कर्मों के अनुसार चलता है। जैसे-व्यक्ति न चाहते हुए भी कई रीति-रिवाजों को सामाजिक दबाव या माता-पिता के दबाव में मानता है। किसी परिवार के एक व्यक्ति के अच्छे कामों या कार्यों का सुफल सारा परिवार भोगता है, इसके विपरीत भी उतना ही सच है। जातीय-सांप्रदायिक दंगों के समय कुछ असामाजिक तत्वों की करतूतों का फल निर्दोष भी भोगते हैं?

कर्मफल के सिद्धांत का शोषकों ने बहुत दुरूपयोग किया है। इंसान की गरीबी, बीमारी, विकलांगता, उच्च कुल या निम्न कुल में जन्म के लौकिक कारण है। किंतु शोषक इसे पिछले जन्मों के कर्मों के फलों के रूप में प्रचारित कर अपना शोषण चक्र चलाता है। कर्मफल का सिद्धांत यथास्थितिवाद, भाग्यवाद, पलायनवाद व निराशावाद को बढ़ावा देता है, अत: इस शोषणवादी सिद्धांत को भी हम क्यों मानें?

मैंने कहा- यदि आपके कहे अनुसार ईश्वर नहीं है तब हजारों सालों से जो करोड़ों लोग ईश्वर-आत्मा-परलोक को मानते आए हैं, क्या वे सब मूर्ख हैं ? दुनिया में केवल आप ही बुद्धिमान पैदा हुए हैं।

जिज्ञासु- करोड़ों लोग मूर्ख नहीं है, उन्हें मूर्ख बनाया गया है। इंसान की भय, भूख और अज्ञान की कमजोरियों के कारण ईश्वर की कल्पना पैदा हुई है। सत्यजी ने क्या खूब कहा है-

ईश्वर के तीन बाप से, आओ करें पहचान।

हर युग में यही तीन है, भय भूख और अज्ञान ॥

शोषितों का शोषण करने के लिए सामंतवाद, पुरोहितवाद और पूंजीवाद ने मिलकर ईश्वर, आत्मा, पुर्नजन्म और परलोक का खूब दुश्प्रचार किया। इस दुश्प्रचार ने हमें इतना अंधा कर दिया है कि जो संसार पांचों ज्ञानेंद्रियों से प्रत्यक्ष दिखाई देता है, उसे हम माया या स्वप्न समझते हैं, किंतु जिसका कोई ठौर है न ठिकाना? उसे अकाटय सत्य मानते हैं, हाय रे बुद्धि ।

इस संसार में हम अकेले ही बुद्धिमान नहीं हैं। महामानव गौतम बुद्ध, महर्षि चारुवाक (बृहस्पति), महावीर स्वामी, पेरियार रामास्वामी नायकर, डॉ. आंबेडकर, स्वामी विवेकानंद, सरदार भगतसिंह, महामना रामस्वरूप वर्मा, महर्षि डॉ. अब्राहमम टी. कोवूर, महामना मार्क्स, माओ, स्टालिन, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, विश्वनाथ जी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा 'अज्ञात', मेघराज मित्र, प्रो. श्याम मानव, बी. प्रेमानंद, विश्व गुरु इब्न रोश्द, मुश्तफा कमाल पाशा आदि ने संसार के एक-एक रहस्य से पर्दा उठा दिया है। किंतु शासन सत्ता पर शोषकों का कब्जा होने से वे विज्ञान के युग में भी अज्ञान फैलाने से बाज नहीं आ रहे हैं।

मैंने कहा- तुलसीदास जी के अनुसार- 'ईश्वर अंश जीव अविनाशी' अर्थात जीव या आत्मा ईश्वर का अंश है और 'जाकि रही भावना जैसी। प्रभु मूरत देखी तिन तैसी ॥' अर्थात-जिसकी जैसी भावनाएं होती हैं, उसे वैसा ही नजर आता है। चूंकि आप ईश्वर को नहीं मानते हैं, इसलिए वह और उसका प्रभाव आपको नजर नहीं आता है?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! यदि जीव या आत्मा ईश्वर का अंश होता या होती, तब उसमें ईश्वर के गुण भी होते जैसे कि एक ग्राम सोने के एक खरबवें भाग में भी वही गुण होते हैं, जो एक ग्राम सोने में होते हैं, इसी प्रकार यदि आत्मा, परमात्मा का अंश होती, तब उसमें सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमानता के गुण भी होने चाहिए। जैसा कि आपके कथित ईश्वर में हैं। यदि कहो कि सारी गड़बड़ माया की वजह से हुई है, तब भी गलत है। तब फिर माया का साम्राज्य तो ईश्वर से भी बड़ा हो जाएगा।

जहां तक भावनाओं का सवाल है। हमारी भावनाओं से पदार्थ के गुण नहीं बदल जाते हैं। जैसे-कोई गोबर में गुड़ की और गधे में उल्लू की भावना करें, तब गोबर मीठा नहीं लगने लग जाएगा और गधे को उल्लू समझकर आप उसकी पीठ पर हाथ फेरेंगे, तब उसकी पीठ पर पंख नहीं निकल आएंगे। जो पदार्थ जैसा हो, उसे वैसा ही मानना सदभावना है और इसके विरुद्ध मानना या समझना दुर्भावना है।

मैंने कहा- कुछ विद्वानों का कहना है कि परमात्मा रूपी सागर से आत्मा रूपी बूंदे ईश्वर की माया या लीला के कारण चौरासी लाख योनियों के चक्कर में भटक रही हैं। जैसे सागर में मटका डालने से पानी व सागर के पानी में अंतर नहीं होता, केवल एक परदे के कारण हमें मटके और सागर का पानी अलग-अलग दिखाई देता है, किंतु है एक ही। इसी प्रकार आत्मा, परमात्मा का अंश है। जैसे- सागर से उत्पन्न लहरें सागर से अलग नहीं होती हैं या जैसे- अलग-अलग कटोरे के पानी में अलग-अलग चंद्रमा दिखाई देता है, वैसे ही अलग-अलग आत्माएं परमात्मा का अंश है।

हम सबकी आत्मा, परमात्मा का ही रूप है, अर्थात हम स्वयं परमात्मा है, किंतु अपने मूल स्वरूप को शरीर या मन की संगत के कारण भूल चुके हैं। इसीलिए भटक रहे हैं। अब सच्चे गुरु ही हमें अपने असली स्वरूप के दर्शन करवाकर परमात्मा रूपी सागर में मिलवाएंगे, इसीलिए हमें गुरु के सामने आंखे मूंद कर बिना किसी तर्क-वितर्क या सोच-विचार के समर्पण कर देना चाहिए, क्योंकि गुरु भी परमात्मा का ही प्रतिरूप या ऐजेंट है। यही हमारे जीवन का उद्देश्य है। यही वेदांत का सार है और घोर कलयुग में यही मुक्ति का एक मात्र उपाय है।

जिज्ञासु - अरे भोले भाई ! सागर से सागर की बूंदों के गुणधर्म अलग नहीं हो जाते हैं और जिस परमात्मा को तुम अखंड मानते हो, यदि चौरासी लाख आत्माओं को परमात्मा का अंश मान लें, तब वह चौरासी लाख खंडों में खंडित हो जाएगा। फिर जो खुद खंडित हो, वह

ईश्वर कैसे हो सकता है? कथित आत्मा-परमात्मा चेतन पदार्थों के नाम हैं, फिर सागर, मटके, चंद्रमा व पानी जैसे अचेतन पदार्थों से इनकी तुलना कैसे की जा सकती है ? और जो परमात्मा खुद के टुकड़े कर खुद दर-दर की ठोकरे खा रहा हो, भला वह परमात्मा कैसे हो सकता है? क्या कोई डॉक्टर स्वयं के टुकड़े कर फिर स्वयं को जोड़ने का नाटक करता है? कटोरे में चन्द्रमा की प्रतिछाया को कोई मूर्ख ही चंद्रमा कहेगा, ईश्वरवादी प्रतिछाया और असली पदार्थ के गुणधर्म भूल चुके हैं! इसीलिए स्वयं भ्रमित हैं और संसार को भी भ्रम मानकर ब्रह्म की तलाश में भटक रहे हैं।

यदि हम स्वयं परमात्मा हैं या हमारे अंदर परमात्मा है। फिर हमारा जीवन दुखों का सागर क्यों बना हुआ है ? जैसे- किसी का बाप अरबपति हो और उसके बच्चे दाने-दाने को तरस रहे हों, ऐसे में अरबपति बाप के बाप होने का क्या लाभ ? इसी प्रकार यदि हम परमात्मा की संतान हैं या हम स्वयं परमात्मा होते हुए भी भटक रहे हैं फिर हमारे परमात्मा या उसके अंश होने का हमें क्या लाभ है? गुरु को परमात्मा या उसका रूप मानकर उसकी अंधभक्ति से ज्ञान-विज्ञान का नाश होता है। गुरु का सम्मान व सेवा करना अच्छी बात है किंतु उसके आगे आंख बंदकर समर्पण करना मूर्खता है। गुरु का काम हमें जिज्ञासु खोजी, सत्यशोधक बनाना है न कि अपना मानसिक गुलाम बनाकर जीवन भर के लिए भ्रमित करना।

हमारे जीवन का लक्ष्य आत्मा को परमात्मा से मिलना नहीं, पदार्थ से लेकर कथित परमेश्वर तक का यथार्थ या तथ्यात्मक ज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन व दूसरों के जीवन में सुख शांति व समृद्धि

लाना होना चाहिए। संसार या जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए अपने पौरुष या बुद्धिबल का हमें भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए न कि समस्याओं को ईश्वर की माया लीला या पूर्वजन्मों के कर्मों का फल या ईश्वर हमारी परीक्षा ले रहा है। ऐसा सोचकर हम पलायनवादी, भाग्यवादी, निराशावादी बनकर दुखों को भोगते रहें। इंसान अपने पौरुष या बुद्धिबल से हजारों समस्याओं, रोगों, दुखों से मुक्ति पा चुका है और भविष्य में कई समस्याओं, दुखों के निजात पा लेगा। वास्तव में असली सतयुग तो अब आ रहा है किंतु हम कलयुग चिल्लाकर रो रहे हैं और अपने अनमोल जीवन को व्यर्थ ही मानसिक भ्रमों का शिकार बना कर खो रहे हैं।

मैंने कहा- गीता और रामचरित मानस के अनुसार जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब ईश्वर अवतार लेकर सज्जनों का रक्षण और दुष्टों का भक्षण करता है। देखिए-

जब-जब होई धरम के हानी। बाहिं असुर अथम अभिमानी।!

करहीं अनीति जाइ नहीं बरनी! सीदहिं विप्र धेनु सुर धरनी।!

तब-तब घरी प्रभु विविध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

-रामचरित मानस

जिज्ञासु- तुलसीदास जी के अनुसार जब-जब गायों, ब्राह्मणों और देवताओं पर संकट के बादल छा जाते हैं, तब-तब भगवान की नींद हराम हो जाती है और वह क्षीरसागर से भारत में इनकी रक्षा के लिए युद्ध के मैदान में कूद पड़ता है।

अब बताइए जब दो हजार सालों से भारत पर विदेशियों के हमले होते रहे और वे हमें पानीपत के मैदान में दौड़ा-दौड़ा कर मारते रहे। जब देव मंदिरों के साथ गायों और पुजारियों की चमड़ी उधेड़ी जाती रही, तब क्या हमारे अवतारी पुरुष कुंभकरण की नींद में सो रहे थे? गजनी की सड़कों पर हमारे देश की रोती-बिलखती माताएं-बहनें जब दो-दो रुपयों में रखेलों के रूप में बिक रही थीं, तब क्या हमारे अवतारी पुरुषों ने कानों में रूई धुसेड़ रखी थी या आंखों पर पट्टी बांध रखी थी? और जिन्होंने अवतार का ठेका ले रखा है, वे विष्णु भगवान ऐसे संकट के समय में भी बंकट बन कर क्षीर सागर में शेष शैय्या पर क्या लक्ष्मी जी से रासलीला कर रहे थे? वर्तमान युग में हमारे ब्राह्मण समाज के लोगों को कश्मीर में दौड़ा-दौड़ाकर मारा जा रहा है फिर भी ईश्वर अवतार क्यों नहीं ले रहा है? और हमारे पूर्वज अपने श्राप या तंत्र-मंत्र-यंत्र की शक्ति से देवी-देवता या ईश्वर को भी झुका देते थे। अब आतंकवादियों के सामने इनका श्राप और तंत्र-मंत्र-यंत्र काम क्यों नहीं आ रहा है? क्यों हमारा ब्राह्मण समाज शरणार्थी शिविरों में रहने को मजबूर है? अरे भोले भाई! इसी अवतारवाद ने हमें आलसी, कायर, निराशवादी, भाग्यवादी, पलायनवादी बनाकर हमें दुनियाभर का गुलाम बना दिया है। दुनिया के लोग अपनी समस्याएं खुद हल करते हैं और हम हैं कि कल्कि अवतार का इंतजार कर रहे हैं। दुनिया चांद-मंगल, शनि की यात्रा कर रही है और हमारे देश के एम.एस.पी., पी.एच.डी. नौ ग्रह शांति की भ्रांति में उलझे हुए हैं या फिर रात्रि जागरण में मंदिर के माईक से आलाप रहे हैं-

सीताराम-सीताराम, राधेश्याम कहिए।

जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए ।

मैंने कहा- कुछ विद्वानों का कहना है कि ईश्वर मानव जाति के मार्गदर्शन के लिए समय-समय पर अपना संदेश या पैगाम, पैगम्बरों या देवदूतों के माध्यम से पहुंचाता है, क्या यह भी गलत है ?

जिज्ञासु- प्राचीन काल से ही मानव जाति के मार्गदर्शन हेतु विद्वानों ने देश काल परिस्थिति अनुसार प्रयास किए हैं। चूंकि प्राचीनकाल में जनता के पास स्वविवेक या ज्ञान की कमी थी, अतः कुछ विद्वानों ने जनता का मार्ग दर्शन ईश्वरवाणियों की आड़ लेकर किया, ताकि लोग आसानी से उनकी बातों को मान लें। इसी प्रकार पुरोहितों ने लोगों को राजा की आज्ञा को ईश्वर आज्ञा मानकर कानून का पालन करने के लिए प्रेरित किया। आगे चलकर जनता ने ऐसे विद्वानों और राजा-महाराजाओं को सचमुच ही देवदूत या ईश्वरीय अवतार समझ लिया, जिसका रोना आज तक मानव जाति रो रही है।

यदि ईश्वर का मार्गदर्शन सही था, तब वह एक समय में ही एक ही मुकम्मल किताब आसमान से टपका देता, सारे संसार की एक ही भाषा कर देता। समय-समय पर अलग-अलग किताबें और अलग-अलग पैगम्बर भेजकर ईश्वर ने संसार में बखेड़ा खड़ा कर दिया है। यदि ईश्वर इतना ही समझदार है तो आकाशवाणी द्वारा अभी भी सभी को धर्मदर्शन के मामले में एक मत क्यों नहीं कर देता? जिन विद्वानों ने ईश्वरवाणियों की आड़ लेकर हमारा मार्गदर्शन किया है,

उनका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है, किंतु उन्हें अंतिम सत्य का उदघाटक मानकर अपनी अक्ल पर ताले लगाकर दुनिया को पीछे की ओर घसीटना हमारी मूर्खता नहीं तो क्या है?

मैंने कहा- संसार की हर चीज ईश्वर ने इंसान की सुविधा के लिए बनाई है। देखो बच्चे के पैदा होते ही मां के स्तनों में ईश्वर बच्चे के लिए दूध का इंतजाम कर देता है। फिर भी इंसान ईश्वर के अस्तित्व से इंकार करे, क्या यह इंसान का अहंकार या मूर्खता नहीं है ?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई ! क्या हजारों प्रकार की बीमारियां, सैकड़ों प्रकार के मच्छर जीवाणु या विषाणु भी ईश्वर ने इंसान की भलाई के लिए बनाए हैं या उसे तड़फा-तड़फाकर मारने के लिए। आंधी-तूफान, बाढ़-भूकंप व ज्वालामुखी में लाखों निरापद जीव-जंतु, इंसान समेत काल के गाल में समा जाते हैं, क्या इसी में इंसान की सुविधा है? यदि मां बनते ही ईश्वर बच्चे के दूध का इंतजाम कर देता है, फिर वह हर जीव के लिए ऐसा इंतजाम क्यों नहीं करता ? कई जीवों में बच्चे पैदा होते ही उनकी माताएं उन्हें खा क्यों जाती है ? और आजकल की माताएं तो बच्चों को बोतल से दूध पिलाती हैं, तब क्या बच्चा पैदा होते ही ईश्वर बच्चों के लिए बोतल का इंतजाम करता फिरेगा ? इस संसार में मनुष्य के लिए पग-पग पर और हर क्षण रोग, मोत

एवं दुर्घटनाओं का आतंक छाया हुआ है, फिर भी तुम कहते हो कि संसार, इंसान की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। भला हो अनिश्वरवादी वैज्ञानिकों का जिन्होंने ईश्वर पर विश्वास न कर

अपनी बुद्धि व पौरुष के बल पर हजारों बीमारियों पर विजय पाई और दुनिया भर की सुविधाएं मानव जाति को अपने आविष्कारों के माध्यम से दी।

मैंने कहा- यदि ईश्वर वैज्ञानिकों को बुद्धि नहीं देता, तब क्या वे कुछ आविष्कार कर पाते ?

जिज्ञासु- बुद्धि तो अवतारी पुरुषों एवं देवदूतों के पास भी थी, फिर वे अपनी बुद्धि का इस्तेमाल कर मोबाईल फोन, टी.वी., रेडियो, वायुयान, पानी के जहाज, बिजली, रेलगाड़ियां, कम्प्युटर, लेपटाप और इंटरनेट का आविष्कार क्यों नहीं कर पाए ? रात में उजाले के लिए बड़े-बड़े ईश्वर दूत एक 'बल्ब' तक का आविष्कार नहीं कर सके। उन बेचारों के पास माचिस की तीलियां तक भी नहीं थी। बेचारे चकमक पत्थर और बांसों को रगड़-रगड़ कर आग जलाते थे। इसी कारण थक हार कर 'अग्नि' को देवता मान बैठे थे।

बुद्धि प्रकृति की देन है न कि ईश्वर की ! बुद्धि भी पदार्थ का ही एक रूप है। ईश्वरवादी न खुद बुद्धि चलाते हैं, न दूसरों को चलाने देते है। इसी कारण संसार सदियों तक ज्ञान-विज्ञान से वंचित रहा। जब तर्क या बुद्धि व प्रयोग द्वारा यूरोप में क्रांति हुई, तब धर्मगुरुओं ने वैज्ञानिकों का जीना हराम कर दिया था। आज उन्हीं के पाखंडी प्रवचनकर्ता वैज्ञानिकों के हर सिद्धांत व खोजों को अपने धर्मग्रंथों में पहले से ही लिखा हुआ बताकर अपने अनुयाइयों को उल्लू बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। जब बुद्धिमान लोग इनके जाल में

नहीं फंसते हैं, तब ये कलपते हुए चिल्लाते हैं- **"इन्हें पश्चिम की हवा लग गई है, कलयुग आ गया है, कयामत के आसार नजर आ रहे हैं।"** जिस माईक या टीबी, इंटर नेट या पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ये पश्चिम या भौतिकतावाद को गालियां देते हैं, यह सब साधन भी पश्चिम या भौतिकतावाद की ही देन हैं। हजारों सालों से ईश्वरवादी ईश्वर के नाम पर करोड़ों-अरबों घंटे व रुपये कर्मकांड, भक्ति, पूजापाठ, नाम स्मरण या जप में बरबाद करते आ रहे हैं, भला ईश्वर होता तो अपने भक्तों की सुविधा के लिए एकाध यंत्र तो आसमान से टपका देता ?

मैंने कहा- जिस विज्ञान की आप वकालत करते हो, उसकी उम्र ही कितनी है ? खूब से खूब तीन सौ साल। आध्यात्म हजारों साल पुराना है, फिर भी टिका हुआ है। विज्ञान ने ऐसे-ऐसे हथियार बना दिए हैं कि धरती को हजारों बार नष्ट किया जा सकता है। विज्ञान से अशांति व युद्ध और आध्यात्म से शांति व सुख मिलता है।

जिज्ञासु- अक्सर पुरानी चीजें जीर्ण-शीर्ण होकर मानव के लिए खतरनाक हो जाती हैं। कई पुरानी चीजें चाहे वे अपनी उत्पत्ति के समय कितनी ही लाभकारी रही हो, वर्तमान में हानिकारक व आउट ऑफ डेट हो चुकी हैं। हमारे बचपन का जूता कितना ही सुंदर व उपयोगी रहा हो, अब उसे पहनने की कोशिश करना और उसकी याद में नए जूते पहनने से इंकार करना हमारी मूर्खता होगी, इसी प्रकार आध्यात्म का हाल है। विज्ञान तो उतना ही पुराना है। जितना पुराना

मानव का विवेक है। विवेक द्वारा निरीक्षण-परीक्षण व प्रयोग द्वारा मानवता के हित के लिए नए-नए आविष्कार करना विज्ञान का काम है, जिस दिन से इंसान ने अपनी बुद्धि चलाई, उसी दिन विज्ञान का जन्म हो गया था। किंतु परंपरा के ठेकेदारों ने बुद्धि को सदा से दबाए रखा। फिर भी बुद्धिवादियों ने अपने जीवन का बलिदान करके भी विवेक बुद्धि की रक्षा की है।

जहां तक हथियारों का सवाल है धर्म, जाति, सम्प्रदाय, नस्ल या संस्कृति के आधार पर गठित देश यदि आपस में मारकाट करे, तब इसमें विज्ञान का क्या दोष है ? विज्ञान तो जाति, धर्म, नस्ल, संप्रदाय या देशभेद मिटाकर सबके साथ रोटी-बेटी व्यवहार की वकालत करता है। विज्ञान सभी को होमोसेपियंस की संतान मानता है। किंतु ईश्वर या परलोक पर आधारित धर्मों, जातियों, संप्रदायों एवं देशों ने एक-दूसरे को दबाने एवं मिटाने के लिए यदि विज्ञान के हथियारों के आविष्कार करवाकर खुद अपनी मोत का सामान इकट्ठा किया है। तब भला, धर्म, जाति, संस्कृति या संप्रदायों की बीमारियों का दोष विज्ञान के माथे मढ़ना या अशांति और युद्ध के लिए आध्यात्मवादियों का विज्ञान को दोष देना- 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे' के समान नहीं तो क्या है ?

मैंने कहा- जिज्ञासु जी यदि ईश्वर नहीं है, तो संसार में इतनी विविधता क्यों हैं ? दो इंसानों की शक्ल और हथेलियों की लकीरें क्यों नहीं मिलती हैं ? संसार में कोई अमीर तो कोई गरीब क्यों है ? कोई

जन्म से ही विकलांग तो कोई तंदुरुस्त क्यों है ? क्या यह सब ईश्वर की लीला नहीं है ?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! इस विविधता के पीछे जीन विज्ञान, पोषण, जलवायु आदि का प्राकृतिक कमाल है न कि अलौकिक शक्ति का ! गरीब-अमीर हमारी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के कारण है न कि ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म या कर्मफल के कारण, आगे जन्म से कोई विकलांग नहीं होगा , विज्ञान गर्भावस्था में ही बच्चों को सब प्रकार के पोषण देने को तैयार है। हम अपनी कमअक्ली की वजह से विकलांग बच्चे भगवान भरोसे पैदा करते हैं, वरन आनुवांशिकी इंजिनियरिंग तो सर्वगुण संपन्न बच्चे पैदा करने की प्लानिंग कर चुकी है।

मैंने कहा- महर्षि दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है, तीन पदार्थ शाश्वत है- ईश्वर, आत्मा और प्रकृति! ईश्वर, आत्मा और प्रकृति का संचालक है। चूंकि प्रकृति जड़ (अचेतन या निष्क्रिय) होने से कुछ नहीं कर सकती। इसीलिए ईश्वर जरूरी है ?

जिज्ञासु- जो प्रकृति को जड़ (निष्क्रिय) समझे, समझो उसकी बुद्धि ही जड़ हो चुकी है। प्रकृति के अंदर चेतन-अचेतन या सजीव-निर्जीव की एक-दूसरे पर निर्भरता है एवं परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया क्षण-क्षण करते रहते हैं। दयानंद जी ने यदि भौतिक, रसायन एवं जीवविज्ञान का गहन अध्ययन किया होता, तब वे ऐसी अज्ञानतापूर्ण बातें न करते, संसार

में कुछ भी शाश्वत नहीं है, सब कुछ प्राकृतिक बलों या कारणों से प्रतिक्षण बदल रहा है। प्रकृति अपना संचालन स्वयं करती है, उसे किसी संचालक की जरूरत नहीं है। प्रकृति में ही चेतन-अचेतन क्रियाएं सतत होती रहती है। जैसे-जंगल में हजारों प्रकार के पेड़-पौधे पैदा और नष्ट होते रहते हैं।

मैंने कहा- आप कुछ भी तर्क दें, किंतु ईश्वर को करोड़ों लोग मानते हैं। कोई उसे साकार तो कोई उसे निराकार मानता है। किसी के लिए वह सगुण तो किसी के लिए वह निर्गुण है। कोई उसे स्त्री रूप में, तो कोई पुरुष रूप में मानते हैं। कोई उसे सातवें, तो कोई उसे चौथे आसमान पर मानते हैं।

जिज्ञासु- यदि ईश्वर होता, तब सारे लोग उसके स्वरूप या आकार-प्रकार या उसके रहन-सहन खानपान को लेकर परस्पर विरोधी विचार क्यों रखते ? स्पष्ट है कि इंसान ने अपने-अपने बातावरण और परिस्थितियों के हिसाब से ईश्वर की कल्पना की है, न कि वह कोई सच्चाई है।

यदि ईश्वर को साकार मानें तब वह ससीम हो जाएगा। फिर यह ससीम होकर असीम संसार का संचालन कैसे कर सकता है ? यदि उसे निराकार मानें तब वह अचेतन पदार्थ हो आएगा। यदि वह निराकर होने से अचेतन या जड़ है, तब उसमें और प्रकृति में अंतर ही क्या रह जाएगा ? इस प्रकार ईश्वर को न साकार माना जा सकता है न निराकार! उसे सगुण या निगुर्ण भी नहीं माना जा सकता, जब उसका अस्तित्व है ही नहीं, तब उसे गुणसहित या गुणरहित कैसे

माना जा सकता है ? जब सातवें या चौथे आसमान ही नहीं है, फिर सातवें या चौथे आसमान पर उसका ठिकाना कैसे माना जा सकता है?

मैंने कहा- कुछ विद्वानों का कहना है कि ईश्वर को तर्क, बुद्धि, विवेक या वैज्ञानिक विधि द्वारा नहीं ! आस्था, विश्वास, श्रद्धा और प्रार्थना, पूजा-पाठ या नाम जप द्वारा जाना जाता है। जैसे-गुड़ की मिठास गूंगा नहीं बता सकता, उसी प्रकार ईश्वर अनुभव करने की चीज है न कि तर्क द्वारा प्रमाणित करने की। जैसे बिजली को हम महसूस करते हैं न कि देखते हैं ? जैसे दूध में घी छिपा रहता है, किंतु बिलोने से निकलता है ?

जिज्ञासु- यदि ईश्वर तर्क, बुद्धि, विवेक या विज्ञान द्वारा नहीं जाना जा सकता, तब इसका अर्थ हुआ- ईश्वर तर्कहीनों, बुद्धिहीनों और विवेकहीनों के दिमाग का वहम है। यदि ईश्वर वैज्ञानिक विधि द्वारा नहीं जाना जा सकता है ? इसका मतलब ईश्वरवादी लोग अवैज्ञानिक बातों को मानकर मूर्ख बने जा रहे हैं और जो बुद्धिमान हैं, उन्हें नास्तिक, धर्मविरोधी, राष्ट्रविरोधी, अधार्मिक और पापी कहकर अपने मूर्ख होने पर स्वयं की पीठ थपथाप रहे हैं। यदि गूंगा गुड़ के स्वाद को वाणी द्वारा नहीं व्यक्त कर सकता, यह तो उसकी मजबूरी है ? किंतु जिनके पास जुबान हो, वे क्यों गूंगे होने का ढोंग रचे हुए हैं? ऐसे पाखंडियों को हम क्या कह सकते हैं?

यदि निराकार बिजली का अस्तित्व भी होता है, तब बताईए बिजली हजारों प्रकार के कार्य कर अपना अस्तित्व मनवा रही है। फिर

ईश्वर अपने सामर्थ्य द्वारा अपना अस्तित्व प्रकट क्यों नहीं करता है ? निश्चित ही यदि वह होता, तब किसी न किसी रूप में अपना अस्तित्व मनवा ही लेता ? दूध रूपी संसार को दार्शनिक व वैज्ञानिक सदियों से बिलो रहे हैं, फिर भी घी रूपी तुम्हारा ईश्वर प्रकट क्यों नहीं होता है ? यदि अमेरिका, यूरोप, रूस, चीन, जापान, कोरिया तथा भारत के बुद्धिस्टों, जैनियों, मार्क्सवादियों अंबेकरवादियों के सारे कार्य ईश्वर को न माने बिना ही चलते रहते हैं। तब हमें ईश्वर के पचड़े में पड़कर अपने समय, पैसे और बुद्धि को बरबाद करने की जरूरत ही क्या है ?

मैंने कहा- आदि शंकराचार्य के अनुसार एक तर्क दूसरे तर्क को काटता है। अतः ईश्वर या परलोक के विषय में तर्क या प्रयोग का सहारा नहीं, शास्त्र को ही एक मात्र प्रमाण स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि शास्त्रों में ईश्वर का उल्लेख है और शास्त्र, ईश्वर की वाणी है, अतः शास्त्र और ईश्वर दोनों ही सत्य व प्रामाणिक है।

जिज्ञासु- एक हथियार द्वारा दूसरे हथियार को नष्ट किया जा सकता है। इसका मतलब क्या हथियारों की उपयोगिता नष्ट हो जाती है ? एक तर्क द्वारा दूसरे तर्क को काटा जा सकता है। किंतु तर्क का उद्देश्य यह नहीं है कि हम दूसरों की बातें बेवजह काटें किंतु इसका मूल उद्देश्य है, हम तर्क के माध्यम से तथ्य और सत्य को जानें न कि वाद-विवाद करते रहें। जो लोग पूर्वाग्रह-दुराग्रह से ग्रस्त रहते हैं, वे सत्यशोधक नहीं, सत्यरोधक के रूप में तर्क का दुरुप्रयोग करते हैं।

शास्त्र से ईश्वर और ईश्वर से शास्त्र प्रमाणित नहीं होता, क्योंकि जैसे कोई पंडा या ओझा नाच-कूदकर यह कहे कि मेरे अंदर देवी-देवता आता है व मैं जो कुछ बोलता हूं वह देवी-देवता की वाणी है। जिसे मनोविज्ञान का ज्ञान है, वह तुरंत जान जाएगा कि पंडा मनोरोग का शिकार है या ढोंग द्वारा लोगों को लूट रहा है। किंतु आम आदमी उसे सचमुच ही देवी-देवता मान लेते हैं। जिस प्रकार वर्तमान पंडे-ओझों की बातें अप्रमाणिक हैं, उसी प्रकार प्राचीन ईश्वरवाणियों या धर्म के ठेकेदारों के 'ढोल की पोल' समझना चाहिए।

मैंने कहा- जैसे हम अपने बाप को बिना किसी प्रमाण के अपना बाप स्वीकार करते हैं। गुरुत्वाकर्षण बल, पृथ्वी का घूमना, कई ग्रह-नक्षत्रों का अस्तित्व हम केवल किताबों में पढ़कर या सुनकर ही मानते हैं, क्योंकि यह सब खोजें बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने की है। उसी प्रकार बड़े-बड़े ऋषि मुनियों द्वारा अनुभूत ईश्वर, आत्मा, परलोक को हमें मानना चाहिए।

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! हमारे माता-पिता का संबंध सामाजिक एवं कानूनी स्वीकृति के बाद होता है।

हमारे पिता गर्भावस्था से लेकर जीवनपर्यन्त हमें हर प्रकार से संरक्षण देते हैं, इस कारण हर एक का पालक और जनक एक ही होता है, यदि किसी औरत के एक साथ कई पुरुषों से संबंध हों तो किसी व्यक्ति विशेष का पिता होना संदिग्ध हो सकता है, किंतु उन्हीं में से किसी एक व्यक्ति का पिता होना अनिवार्य है। किसी को अपने बाप

के बाप होने पर शंका हो तो डी.एन.ए. टेस्ट द्वारा उसकी सच्चाई पता चल ही जाती है, किंतु ईश्वर के अस्तित्व पर शंका होने पर उसका कौन सा टेस्ट आपके पाखंडी गुरु लोग करते हैं ? जिससे ईश्वर प्रमाणित हो जाए और नास्तिकों के एक-एक सवाल का जवाब मिल जाए।

वैज्ञानिकों के निष्कर्ष प्रयोगों द्वारा सिद्ध होते हैं, जिन्हें दुनिया का कोई भी व्यक्ति प्रयोग कर देख सकता है। विज्ञान के निष्कर्ष सारी दुनिया के वैज्ञानिक मानते हैं, किंतु धर्मगुरुओं के निष्कर्ष उनके अंधे अनुयायियों के अलावा कोई नहीं मानता है। बताओ! सारी दुनिया के धर्मगुरु ईश्वर के स्वरूप, आकार, खानपान, निवास स्थान आदि को लेकर झगड़ते क्यों हैं ? स्पष्ट है इनके विचार अवैज्ञानिक हैं, अतः कथित जगदगुरुओं का ईश्वर संबंधी बयान भी झूठा है। फिर हमारा पिता तो हमें भौतिक रूप में दिखाई देता है, हमारे हर सुख-दुख में हमारे साथ तन-मन-धन से लगा रहता है। जबकि कथित ईश्वर तो बिना कुछ करे धरे ही सबका बाप बनता फिरता है, इसी कारण कमअक्ल लोग उसे परमपिता परमेश्वर कहते हैं।

मैंने कहा- जैसे किसी पदार्थ का नाम हो और उसे हमने नहीं देखा हो, फिर भी उसका अस्तित्व तो रहता ही है। उसी प्रकार संसार की सभी भाषाओं में ईश्वर को विभिन्न नामों से जाना जाता है। इसका मतलब हुआ उसका अस्तित्व अवश्य होगा ?

जिज्ञासु - किसी काल्पनिक वस्तु के नाम होने मात्र से उसका अस्तित्व नहीं हो जाता है, संसार की सभी भाषाओं में भूत-पलीत, जिन-जिन्नात, यमदूत व देवदूत आदि शब्द पाए जाते हैं, तब क्या इन काल्पनिक जीवों का अस्तित्व भी मान लें। यदि बांझ स्त्री सपने में अपने पोते की शादी में शामिल हो जाए, तब क्या हम हकीकत में भी उसे शादी की बधाई देते फिरेंगे ?

मैंने कहा- यदि ईश्वर नहीं है तो सारी मानव जाति में ईश्वर का विचार आया ही क्यों? क्या एक साथ सारी मानव जाति ने भांग पी रखी थी ?

जिज्ञासु- आदिकाल से ही मानवजाति गुफाओं में व जंगलों में निवास करती रही है और वह बाढ़-भूकंप, आंधी-तूफान, ज्वालामुखी, अमावस्या-पूर्णिमा, सूर्यग्रहण-चन्द्रग्रहण, ग्रह-नक्षत्रों, उल्कापातों आदि के मूलभूत कारणों से अनजान रही है। स्थिति प्रायः आज भी वैसे की वैसी ही है। इन सभी रहस्यों के पीछे उसने किसी अज्ञात शक्ति की कल्पना की, इसी कारण सारी मानवजाति में ईश्वर का विचार चेचक की बीमारी की तरह फैला गया। चूंकि आज चेचक का रहस्य जानकर उसको टीकों के माध्यम से मिटाया जा चुका है। अतः आज भी कोई पढ़ा-लिखा विद्वान यदि उसे 'शीतल माता' मानकर उसकी आरती उतारे, तब आप उसे वज्रमूर्ख नहीं तो क्या कहेंगे ? इसी प्रकार जब आज हम प्रकृति के अधिकांश रहस्यों से पर्दा उठा चुके हैं, फिर भी यदि

ईश्वर को मानकर पलायनवादी, भाग्यवादी, निराशावादी, अकर्मण्य बने रहें, तो यह हमारी मूर्खता नहीं तो क्या है ?

मैंने कहा- आपके तर्कों से तो दिमाग चकरा जाता है। हमारी आस्थाएं भी चक्कर खाने लग जाती हैं, किंतु कई लोग ईश्वर से बातचीत करने का दावा करते हैं। जैसे- स्वामी विवेकानन्द और उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस मां काली से प्रत्यक्ष बातचीत करते थे?

जिज्ञासु- हमारे बचपन के संस्कार हमें कई प्रकार के वहमों व भ्रमों का शिकार बना देते हैं? हम दिन में जैसा सोचते हैं, वैसे ही हमें रात में सपने आते हैं? जब हमारे वहम या मानसिक भ्रमों की मात्रा बढ़ जाती है, तब हमें दिन में या जाग्रत अवस्था में ही भूत-पलीत, देवी-देवता के दर्शन होने लग जाते हैं। चूंकि रामकृष्ण बचपन से ही काली के दिवाने थे । अतः उन्होंने काली की मूर्ति से हुए स्वसंवाद को ही काली से साक्षात्कार मान लिया था। आगे चलकर जब स्वामी विवेकानन्द महान विद्‌वान बने, तब वे स्वयं नास्तिक हो गए थे।

मैंने कहा- कई योगी, ऋषि-महर्षि ध्यान, योग, प्राणायाम व समाधि द्‌वारा ईश्वर एवं आत्मा का साक्षात्कार करने का दावा सदियों से करते रहे हैं, क्या यह भी झूठ है ? महामानव गौतम बुद्‌ध ने क्या ध्यान, योग, समाधि द्‌वारा ज्ञान प्राप्त नहीं किया था?

जिज्ञासु- ध्यान, योग, प्राणायाम व समाधि द्वारा इंसान स्वयं को आत्मसम्मोहित कर लेता है। बचपन से ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग-नरक या देवी-देवताओं के काल्पनिक चित्र जो हमारे मन में बैठे रहते हैं, वही ध्यान, योग, समाधि द्वारा योगियों, ध्यानियों एवं ऋषि-महषियों को अपने मानस में दिखाई देने लग जाते हैं, जैसे हमारे मन में बैठी तस्वीरें हमें बादलों में दिखाई देने लगती है। मनोविज्ञान के ज्ञान के अभाव में ये बेचारे उसी को ईश्वर या आत्म साक्षात्कार मान कर अपने अनुयाइयों को ठगते रहते हैं। स्वयं अपनी जिंदगी दिमागी उन्मादों में जीकर बरबाद करते हैं और साथ ही लाखों लोगों को भटकाकर 27 तत्वों में विलीन हो जाते हैं।

महामानव बुद्ध को ध्यान, योग, समाधि द्वारा ज्ञान नहीं हुआ था, जब आप विभिन्न महर्षियों एवं योगियों की साधना पद्धतियों से साधना व तपस्या कर उकता चुके थे। तब छः सालों के मानसिक चिंतन अनुभव के बाद आपने ज्ञान प्राप्त किया था। बुद्ध ने मानव जाति को ज्ञान प्राप्त करने के लिए' विपश्यना' नामक साधना पद्धति दी है। जिसका मतलब होता है कि संसार एवं शरीर को विशेष रूप से देखना, इसकी गतिशीलता एवं क्षणभंगुरता को ध्यान से समझना न कि आंख बंदकर ईश्वर का चिंतन करना या निठल्ले बनकर बैठे रहना है।

मैंने कहा- कुछ विद्वानों का दावा है कि उन्होंने अपने अनुभव से ईश्वर को जाना है या महसूस किया है या पूरे होशो-हवास में ईश्वर से बातचीत की है, क्या यह भी गलत है?

जिज्ञासु- हमारी पांचों ज्ञानेन्द्रियों से हमें पांच प्रकार के मनोभ्रम होते हैं, जैसे रस्सी को सांप समझना या रोड पर पानी दिखाई देना, आंखों का भ्रम है। डरावनी आवाजें सुनाई देना, कानों का भ्रम है। बीमार होने पर खाना बेस्वाद लगना, जीभ का भ्रम है। बेवजह किसी वस्तु में किसी और वस्तु की खुश्बू आना, नाक का भ्रम है। सिर से टोपी उतारने पर भी सिर पर टोपी होने का आभास होना, त्वचा का भ्रम है। इन्हीं इंद्रिय भ्रमों के कारण लोगों को भूत-पलीत, जिन्न-जिन्नात, देवी-देवता या ईश्वर दिखाई देने लग जाता है। चाहे कोई कितना ही दावा करे कि मैं पूरे होशो-हवास में था हर ईश्वरवादी या परलोकवादी मरते दम तक मनोभ्रम में ही जीता है, अतः ईश्वरवादियों के अनुभव भी कल्पित हैं न कि वास्तविक ! महामानव बुद्ध और कबीर ने क्या खूब कहा है- जब वह है ही नहीं, तो दिखेगा कैसे और किसको, और किससे बातचीत करेगा? देखिए-

जो मतवारे राम के, मगन होई मन माहिं ।

ज्यों दर्पन की सुंदरी, गहे न आवे बांहि ॥

बे देखे का करे बखाना, ताते भोंदू सकल जहाना ।

जपे तपे मर पार न पावे, तब अपार कहि के उरझावे ॥

-संत कबीर

मैंने कहा- जैसे गणित में मानाकि मूलधन सौ रुपये है। आदि 'मान' लिया जाता है, वैसे ही हमें ईश्वर को भी 'मान' लेना चाहिए ?

जिज्ञासु- गणित में किसी व्यवहारिक समस्या को हल करने के लिए किसी कल्पित राशि को मान लिया जाता है ताकि वास्तविक समस्या को हल किया जाता है। किंतु व्यवहारिक जगत में कल्पित ईश्वर को मानने से समस्याओं का अंबार लग जाता है। जिन देशों में ईश्वरवाद है, वहां गरीबी, अनपढ़ता, भुखमरी, सांप्रदायिकता, नारियों पर अत्याचार तथा जातीय-नस्लीय समस्याओं का अंबार लगा हुआ है। ईश्वरवादी देश जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पिछड़े रहे हैं और निरीश्वरवादी देशों के सामने कटोरा लेकर भीख मांगते रहे हैं।

मैंने कहा- आस्था, श्रद्धा, विश्वास और ईमान क्या सब झूठ हैं ?

जिज्ञासु- किसी वास्तविक पदार्थ के अस्तित्व को जानकर मानना आस्था है। विवेक बुद्धि द्वारा किसी पदार्थ की सत्यता को मानना श्रद्धा है। तर्क, बुद्धि तथ्य द्वारा प्रमाणित पदार्थ या विचार को मानना विश्वास है वास्तविकता को जानना मानना ईमान है। जो इसके विरुद्ध जाने-माने वह अंधआस्था, अंधश्रद्धालु, अंधविश्वासी और बेईमान हैं।

मैंने कहा- क्या बड़े-बड़े डॉक्टर, इंजिनियर, वैज्ञानिक, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री ये सब मूर्ख हैं? जो ईश्वर में विश्वास करते हैं और पत्थरों के सामने नाक रगड़ते हैं? कई वैज्ञानिक लोग भी ईश्वर में विश्वास करते हैं?

जिज्ञासु- हमारे माता-पिता हमें विज्ञान इसलिए नहीं पढ़ाते हैं कि हमें प्रकृति के रहस्यों से पर्दा उठाना है, वास्तव में हमारे विज्ञान पढ़ने-पढ़ाने का मकसद मोटे वेतन वाली नौकरी करना या करवाना है, बचपन से हमें पूजा-पाठ प्रार्थना करना सिखाया जाता है। जब हम विज्ञान की परीक्षा देने जाते हैं। तब भी किसी काल्पनिक ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान ! हमें पास कर देना। नौकरी के लिए भी हम मंदिर-मस्जिद में रोते फिरते हैं। नेता-नेती चुनाव से पहले देवी-देवताओं, तान्त्रिकों-मान्त्रिकों के आगे नाक रगड़ते रहते हैं। ऐसे में यदि कोई डॉक्टर, इंजिनियर, वकील, मजिस्ट्रेट, राजनेता या वैज्ञानिक बनकर भी अवैज्ञानिक जीवन जीए, तब यह उसकी मूर्खता नहीं, बचपन के कुसंस्कार या अवैज्ञानिक माहौल है। जो उसे पढ़ा-लिखा जाहिल बनाता है।

मैंने कहा- किसी वस्तु की सत्यता के लिए प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द या शास्त्र ही तर्कशास्त्र में प्रमाण माने गए हैं, क्या ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म या कर्मफल को आप चारों में से किसी भी प्रमाण द्वारा सही नहीं मानते हैं ?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! पांचों ज्ञानेन्द्रियों (आंख, कान, नाक, त्वचा, जीभ) द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है, उसे प्रत्यक्ष कहते हैं। अब तुम ही बताओ, यदि परलोक की चीजें इन सबकी पकड़ में होतीं, तब हर आदमी को ईश्वर का साक्षात्कार हो जाता और सदियों तक दार्शनिक

विवाद ही नहीं होते। स्पष्ट है कि मानव ने अपनी कमअक्ली के कारण प्रत्यक्ष प्रमाण को छोड़कर अनुमान, उपमान और शब्द प्रमाण के सहारे ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म व परलोक की कल्पना की है। जैसे हर कार्य का कोई न कोई प्राकृतिक या लौकिक कारण या कर्ता होता है यह अनुमान सही है किंतु इसी के सहारे ईश्वर का अनुमान ठीक नहीं, क्योंकि इससे केवल यही सिद्ध होता है कि हर कार्य का कारण या कर्ता होता है न कि ईश्वर.

मानव जब प्राकृतिक घटनाओं के प्राकृतिक कारणों को नहीं समझ पाया, तब उसने अदृश्य कारण या अदृश्य कर्ता का अनुमान लगाया। जैसे सुख-दुख के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, शारीरिक व मनोवैज्ञानिक कारणों पर विचार किए बिना ही दयानंद जी पुनर्जन्म, कर्मफल या पाप-पुण्य को कारण बनाकर कारणों की सतत शृंखला से छुटकारा पा गए। जैसे गर्भवती माता के गर्भ में लड़का है या लड़की, इसका ज्ञान जन्म से पहले इंसान को विज्ञान के अभाव में नहीं हो सकता था। अतः उसने कहा कि ईश्वर की लीला वही जाने, हम क्या जानें ? किंतु आज ज्ञान-विज्ञान के युग में जन्म से पहले ही बच्चे के लिंग का पता चल जाता है।

उपमान का अर्थ होता है- सादृश्य से अदृश्य का पता लगाना, जैसे किसी ने नीलगाय को नहीं देखी हो, तब उसे गाय की उपमा या उदाहरण से समझाकर नीलगाय का उपमान (ज्ञान) करवाया गया है। भला राजा महाराजाओं की राजकीय व्यवस्था को देखकर उपमान द्वारा परलोक के राजा (ईश्वर) व उसकी अदालत का उपमान ठीक

सत्य की खोज

नहीं है, क्योंकि लौकिक क्षेत्र के अनुमान-उपमान जब लौकिक क्षेत्र में ही कई बार गलत साबित हो जाते हैं फिर इनको पारलौकिक क्षेत्र में कैसे सही माने जा सकते हैं ?

जहां तक शब्द (या शास्त्र) प्रमाण का सवाल है, इसके द्वारा भी परलोक सिद्ध नहीं होता है, क्योंकि हर धर्म के धर्मगुरु अपनी किताब को ईश्वरवाणी व अन्य धर्मों की किताबों को नकली या फर्जी मानते हैं, अतः किसी भी किताब को ईश्वरीय नहीं माना जा सकता है। हमारा तो माना है कि **"जो अपने शास्त्र को ईश्वरवाणी या अपने विचार को अंतिम सत्य या संदेह से परे या परिपूर्ण मानता है, वह महामूर्ख है, क्योंकि ज्ञान गतिशीलता का नाम है न कि जड़ता का।"**

मैंने कहा- कुछ विद्वानों का कहना है कि संकट के समय आस्तिक को तो किसी अदृश्य शक्ति को याद करने पर सहारा या मानसिक शांति प्राप्त हो जाती है, किंतु नास्तिक संकट के समय असहाय हो जाता है। उसकी मृत्यु भी बैचेनी में होती है ?

जिज्ञासु- आस्तिक संकट के मूलभूत कारणों को न जानकर ईश्वर, कर्मफल, पुनर्जन्म, भाग्य का खेल, माया, यह जीवन तो परीक्षा का है, सुख-दुख ईश्वर की लीला है, आदि निराशावादी विचारों में फंसकर जीवन भर मुसीबतों को झेलता रहता है। वह कभी समस्याओं के मूलभूत कारणों को खोजकर हल करने का प्रयास ही नहीं करता। इसी कारण उसका जीवन दुखों का सागर बन जाता है, फिर वह भवसागर से पार उतरने के लिए मौत का इंतजार करता है। ताकि स्वर्ग में

सबाब, कबाब और शराब का बेरोक टोक मजा ले सके। आस्तिक जीवन भर नरक के भय में जीता है।

नास्तिक समस्याओं के हल खोजता है। जीवन को स्वर्ग बनाता है। नास्तिक मृत्यु से भयभीत नहीं होता, वह जानता है कि दिमाग की न्यूरॉस कोशिकाओं का काम करना बंद होना ही मेरी मृत्यु है। इसके बाद परमशांति है। न कोई स्वर्ग है न नर्क, न अगला पिछला जन्म। देखो, सरदार भगतसिंह नास्तिक होने के बावजूद देश की आजादी की खातिर हंसते-हंसते फांसी पर झूल गए। आस्तिक मौत के डर को कम करने के लिए काल्पनिक स्वर्ग-नरक एवं आत्मा की अमरता की कल्पना कर झूठ के साथ ही जीते और मरते हैं। यदि तुम ईश्वर के इतने बड़े दलाल हो तो बताओ। ईश्वर सजीव है या निर्जीव ?

मैंने कहा- ईश्वर को निर्जीव तो नहीं माना जा सकता, वह सजीव ही हो सकता है?

जिज्ञासु- यदि वह सजीव है तब उसमें सजीवों के लक्षण भी होने चाहिए। जैसे वृद्धि, श्वसन, उत्तर्जन, प्रजनन, आकार, आयतन आदि। यदि उसमें सजीवों के लक्षण हैं। तब वह अजन्मा, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वगुण संपन्न नहीं हो सकता ? यदि उसे सजीव-निर्जीव दोनों से भिन्न माना जाए, तब वह एक विषाणु हो जाएगा, जो मानवता को विषाणुओं की तरह ढस रहा है ? अच्छा बताओ, वह तत्व है, यौगिक है या मिश्रण ?

मैंने कहा-उसे यौगिक व मिश्रण तो माना नहीं जा सकता ? वह तत्व ही हो सकता है ?

जिज्ञासु- यदि वह तत्व है, तब उसे वैज्ञानिक विधि द्वारा ऊर्जा में बदला जा सकता है ! यदि उसे वैज्ञानिक प्रयोगशाला में नचाता फिरे, फिर उसे ईश्वर कैसे माना जा सकता है ? अच्छा ! बताओ तुम्हारा ईश्वर स्त्रीलिंग है या पुर्लिंग, उभयलिंग है या नपुसंकलिंग ?

मैंने कहा- कुछ लोग उसे स्त्री रूप में तो कुछ पुरुष रूप में याद करते हैं? तो कुछ लोग अर्धनारीश्वर के रूप में ?

जिज्ञासु- यदि उसे स्त्री माने तब बताओ उसने किस पुरुष के संयोग से यह सृष्टि बनाई, यदि उसे पुरुष माने तब वह किस मां के पेट से पैदा हुआ, उसका बाप कौन था ? यदि उसे उभयलिंगी माने, तब क्या वह खुद से संभोग कर गधे-घोड़े सब एक साथ पैदा करता रहा ? यदि उसे किन्नर या नपुसंकलिंग मानें तब वह जीवों को कैसे पैदा कर सकता है?

मैंने कहा- आप ईश्वर को इसलिए नहीं मानते हो, क्योंकि उसे तर्क द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सकता व प्रयोग द्वारा उसे प्रयोयशाला में बताया नहीं जा सकता ? यदि भविष्य में ऐसा कोई ईश्वरवादी विद्वान हो जाए, तो तर्क या प्रयोग द्वारा ईश्वर को साबित कर दे, फिर भी आप उसे मानोगे या नहीं ? आपके लिए तो तर्क और प्रयोग ही ईश्वर है।

जिज्ञासु- तर्क और प्रयोग, रहस्यों से पर्दा उठाने के साधन है न कि साध्य। इन्हें ईश्वर कहना या मानना मूर्खता है, क्योंकि कई ईश्वरवादी विचारक तर्क व प्रयोग द्वारा ईश्वर आत्मा या परलोक को सिद्ध नहीं कर पाते हैं। अतः वे समझते हैं कि अनीश्वरवादी विचारक तर्क या प्रयोग को ही ईश्वर मानते होंगे। जब ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं, फिर उसे तर्क या प्रयोग के रूप में भी कैसे माना जा सकता हैं और भविष्य में उसे कैसे सिद्ध किया जा सकता है? जब ईश्वरवादी आज तक उसके आकार, आयतन, निवास स्थान, खान-पान, रहन-सहन, बीबी बच्चों आदि सभी में मत भिन्नता रखते हों, तब वे भविष्य में क्या उसके बाप सिद्ध करेंगे ?

मैंने कहा- यदि हम बिना किसी तर्क के किसी अदृश्य शक्ति या ईश्वर को मान लें, तो इसमें हमारी कौन सी हानि है ?

जिज्ञासु- ईश्वर को मानने से एक नहीं करोड़ों हानियां हैं, ईश्वर के नाम पर ही जाति, धर्म, संप्रदायों की नींव पड़ी है। उसी के आधार पर सारे शास्त्र लिखे गए हैं, करोड़ों अरबों रुपये उसको खुश करने के नाम पर कर्मकांडों के रूप में खर्च किए जाते है। करोड़ों लोगों के अरबों घंटे काल्पनिक ईश्वर की पूजा-पाठ, प्रार्थना एवं नाम सुमरण में बरबाद हो रहे हैं। यदि यही समय पैसा व बुद्धि खेतों, मिलों, शिक्षा या अन्य उत्पादक कार्यों में लगे, तब धरती स्वर्ग बन जाती और निठल्ड़ों को स्वर्ग की कल्पना भी न करनी पड़े। आस्तिकों ने हर बार ईश्वर के

नाम पर तर्क, बुद्धि, विवेक, वैज्ञानिक अनुसंधानों एवं आविष्कारों का विरोध किया है। संसार की समस्याओं को ईश्वर की लीला या माया समझकर आस्तिकों ने संसार को कथित नर्क से भी बदत्तर बना दिया है। जातीय, सांप्रदायिक दंगों ने देश और मानवता के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं।

मैंने कहा- कोई भी धर्म लड़ाई का समर्थन नहीं करता। धर्म और ईश्वर के नाम पर जो लोग लड़ते हैं, उनको दोषी न मानकर ईश्वर या धर्म को दोष देना ठीक नहीं है। यह दंगे-फसाद ईश्वर के नाम का दुरुपयोग है।

जिज्ञासु- हर धर्म दूसरे धर्म के लोगों को काफिर, नास्तिक, अधार्मिक, पापी भटके हुए लोग समझता है। अपने शास्त्र, परंपरा को परम वैज्ञानिक एवं सार्वकालिक सत्य व अन्यों को अंधविश्वास समझता है। यही शिक्षा आगे चलकर सांप्रदायिक और जातीय दंगों का रूप ले लेती हैं। धर्म व जाति को ईश्वरीय व्यवस्था मानकर लोग अंतर्जातीय अंतर्धार्मिक शादियों का विरोध करते हैं। यदि इंसान, धर्म और ईश्वर के नाम का दुरुपयोग करता है। तब भगवान क्या भांग खाकर सो रहा है? आज साधारण आदमी भी अपने नाम के दुरुपयोग को रोकने के लिए कोर्ट मानहानि का दावा ठोंक देता है। फिर भला ईश्वर अपने नाम का दुरुपयोग देखते हुए भी अंघा, गूंगा व बहरा क्यों बना हुआ है?

मैंने कहा- कुछ विद्‌वानों को कहना है कि नास्तिक लोग भोगवादी, अनैतिक, इंद्रिय लोलुप, व्याभिचारी व समाज की व्यवस्था भंग कर अराजकता फैलाने वाले होते हैं ?

जिज्ञासु- संसार में महामानव बुद्‌ध, महावीर स्वामी, कार्लमार्क्स, पेरियार ई.वी. रामास्वामी, विश्वनाथ, रामस्वरूप वर्मा, डॉ. अब्राहम टी. कोवूर, सरदार भगतसिंह, बी. प्रेमानंद स्वामी विवेकानन्द से बड़े नास्तिक कौन हैं ? और इनसे बड़े त्यागी, तपस्वी, नैतिकता या मानवता के उद्‌धारक या प्रचारक कौन हैं ? यह जानते हुए भी कि हमारे त्याग तपस्या, नैतिकता, संयम, ज्ञान प्रसार का मरने के बाद हमें स्वर्ग या परलोक में कोई लाभ नहीं मिलेगा। फिर भी मानवता के कल्याण के लिए नास्तिकता की गालियां खाते हुए भी कार्य करना नास्तिक विचारकों और उनके समर्थकों की महानता है। आस्तिक विचारकों की नौतिकता व संयम का कोई मूल्य नहीं है, क्योंकि वे संसार में किए नैतिक कार्यों को इस लोभ से करते हैं कि स्वर्ग में हर प्रकार की अय्याशियों करेंगे। वास्तव में ईश्वरवादी लोग दिन-रात स्वर्ग में हर प्रकार के काल्पनिक भोगों को याद करके मन में भोग और ऊपर से योग की माला जपते हुए नाचते रहते हैं।

और जिसे तुम व्यवस्था कहते हो, वह व्यवस्था नहीं अव्यवस्था है। पूंजीवाद, सामन्तवाद और पुरोहितवाद ने ईश्वर के नाम पर जो कथित व्यवस्था बनाई है। उसमें दस प्रतिशत लोग मालामाल और नब्बे प्रतिशत लोग कंगाली का जीवन जीने को मजबूर हैं। यदि नास्तिक विचारक नब्बे प्रतिशत मानवता की रक्षा के लिए परलोकवाद के

झुनझुने से मुक्ति दिलाकर प्रत्येक व्यक्ति को मानव अधिकारों का उपयोग करना सिखाते हैं तो कथित आस्तिक व्यवस्था भंग करने या अराजकता फैलाने का आरोप लगाते हैं। हाय रे पाखंड।

मैंने कहा- देखो यूरोप-अमेरिका में जैसे-जैसे भौतिकवादी विचार बड़े हैं, वैसे-वैसे नैतिक मूल्यों की धज्जियां उड़ा दी गई हैं, लाखों बालिकाएं कुंआरी मां बन रही हैं, अनाथ बच्चों के रखरखाव की समस्याएं खड़ी हो गई हैं, तलाकों का प्रतिशत बढ़ रहा है, मानसिक रोगियों की संख्या बढ़ रही है, लोगों को नींद की गोलियां खाकर सोना पड़ रहा है। आत्महत्याओं का प्रतिशत भी बढ़ा है, नशाखोरी-हिंसा बढ़ी है, यौन रोगों में एडस का आतंक छाया हुआ है, यह सब अनर्थ ईश्वर, परलोक या धर्म को न मानने के कारण ही हुए हैं, फिर भी आप अनिश्वरवाद की वकालत करते हैं ?

जिज्ञासु - कुंआरी मां तो हमारे यहां भी कुंती बनी थी, जिसने कुंआरेपन में ही कर्ण जैसे महावीर को जन्म दिया था। पाराशर ऋषि नाव में ही सत्यवती कुंआरी को गर्भवती बनाकर महर्षि व्यास को पैदा करते हैं। राज महल में अंबिका-अंबालिका को भी व्यास जी ही गर्भवती कर देते हैं। इसका भौतिकतावाद या ईश्वरवाद से कुछ लेन-देना नहीं है, कथित ईश्वर या प्रकृति ने ही इंसान को अत्यंत कामुक बनाकर भेजा है, हमारे देश में सदियों से आध्यात्मवादियों ने अपने मनोरंजन के लिए नट, बेड़िया, बाछड़ा, भानमता आदि जातियां बनाई हैं

और वे पीढ़ी दर पीढ़ी वैश्यावृत्ति को ही अपना धर्म समझकर सदियों में से बेखोफ अपना पैतृक धंधा कर रही हैं।

राजा कृष्णदेव राय के पास बारह हजार औरतें थीं, राजा-महाराजाओं के काल में जागीरदार या गांव के मुखियाओं ने हर नई दुल्हन से सुहागरात मनाने की परंपरा तक डाल रखी थी। मंदिरों में देवदासी प्रथा के नाम पर वैश्यावृत्ति होती रही है, संसार में भारत ही अनोखा देश है जहां खजुराहो, पुरी, कोणार्क जैसे विश्व प्रसिद्ध मंदिरों में कामकला के दृश्य उकेरे गए हैं। हमारे यहां भी लाखों लोग प्रेम विवाह करना चाहते है किंतु जाति व धर्म के बंधनों के गुलाम लोग उनकी हत्या कर देते हैं। ऐसी लाखों लड़कियां हैं जिनके सुसराल और माइके में दोनों जगह पति हैं, एक सामाजिक बंधनवाला, दूसरा अपने गांव या मुहल्ले या कालेज का प्रेमी ! दहेज, बेमेल विवाह, बालविवाह, विधवाओं पर अत्याचार, भ्रूण या कन्या हत्या, देवदासी, नियोगप्रथा, छुआछूत में तो हमारा देश विश्व रिकार्ड बना चुका है। फिर हम किस मुंह से यूरोप अमेरिका को कोसते हैं ?

जब प्राचीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्य खत्म हो जाते हैं, तब हमें नए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना करना चाहिए। भौतिकतावाद के साथ हम महामानव गौतम बुद्ध के पंचशील को अपना लें तो सारी समस्या ही हल हो जाए।

जहां तक नशाखोरी व हिंसा की बात है, हमारे यहां शराब के लिए हमारे पूर्वजों ने कलाल और मछली के लिए भोई व मटन के लिए खटीक आदि जातियों का निर्माण किया था। सदियों से दलित, पिछड़े

व आदिवासियों के साथ हमने जो हिंसा, बलात्कार व आगजनी की है वह विश्व इतिहास में दुर्लभ है। जहां तक नींद न आने या मनोरोग का सवाल है तो महामानव गौतम बुद्ध के मध्यम मार्ग को अपनाए बिना ये समस्याएं हल नहीं होंगी, चाहे अमेरिका, युरोप हो या एशिया। हमारे देश में लाखों नहीं, करोड़ों मनोरोगी हैं। जो पंडे-ओझा, देवी-देवता बन कर गांवों में घूम रहे हैं या देवी-देवताओं व तांत्रिकों मात्रिकों या ज्योतिषियों से अपनी लौकिक पारलौकिक समस्याओं को हल करवाने में लगे हुए हैं।

हम नगे-भूखे लाचार, अनपढ़, गरीब, बेरोजगार व बेकार हैं, फिर भी चैन की नींद सो रहे हैं, क्या यह हमारे देश के लोगों की मूर्खता नहीं है। करोड़ों लोग भूख से मर रहे हैं, किसान आत्महत्या कर रहे हैं, करोड़ों अरबों टन गेहूं गोदामों में सड़ रहा है, फिर भी हम भगवान भरोसे घोड़े बेचकर सो रहे हैं। अरे इस देश की जनता में जरा भी पौरुष होता, तो अभी तक सारी शोषणवादी व्यवस्था में आग लगा देती। किंतु जातिवाद, संप्रदायवाद, भाग्यवाद, पुनर्जन्मवाद, कर्मफलवाद, परलोकवाद व ईश्वरवाद ने इस देश की जनता का सारा जोश ही खत्म कर दिया है, यह तो परलोक सुधारने के चक्कर में पंचकोसी, कांवडयात्रा या अमरनाथ में अमर होने जा रही है।

मैंने कहा- यदि ईश्वर या परलोक नहीं है फिर इंसान नैतिक क्यों रहे?

जिज्ञासु- इंसान के पास स्वविवेक है, हर इंसान अपने साथ अच्छा व्यवहार चाहता है। अतः उसे भी दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना ही होगा। यदि ईश्वर और परलोक नहीं है तो क्या हमें अपने माता-पिता बड़े बुजुर्गों, गरीबों, रोगियों व पड़ोसियों की सेवा नहीं करनी चाहिए ? क्या हमें लोक कल्याणकारी नियमों-सिद्धांतों को केवल इसलिए मानना चाहिए। क्योंकि यदि इन्हें नहीं मानेगे तो भगवान हमें परलोक में रिमांड पर ले लेगा ? अपने देश, समाज या विश्व कल्याण के लिए किए गए कार्यों के लिए क्या हमें किसी पारलौकिक लाभ की जरूरत है ?

गैलेलियों, ब्रूनो, डार्विन, मार्क्स, पेरियार, डॉ. आंबेडकर, सरदार भगतसिंह आदि ने क्या मुसीबतों के पहाड़ इसलिए उठाए थे कि उन्हें इनका लाभ स्वर्ग में मिलेगा ? वास्तव में सच्चा प्रेम, सच्ची सेवा, सच्चा त्याग, नैतिकता और पुण्य वही है जो लौकिक एवं पारलौकिक लोभ, लालच या भय के बिना किया जाए। नैतिकता का आधार ईश्वर या परलोकवाद नहीं, मानवतावाद और बुद्धिवाद होना चाहिए।

मैंने कहा- यदि लोगों का ईश्वर आत्मा, परमात्मा पुनर्जन्म, कर्मफल, कयामत व परलोक आदि से विश्वास उठ जाएगा तो लोग अनैतिक, क्रूर, हिंसक, शराबी तथा व्याभिचारी हो जाएंगे, अतः परलोक या ईश्वर का भय जरूरी है ?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! ये बातें केवल शोषितों को बहकाने के लिए हैं, दुनिया में जितने भी शराबखोरी, वैश्यावृत्ति, व्याभिचार, जुआ-सट्टा,

नशे, हिंसा आदि दुष्कर्मों के अड्डे हैं, उन पर ईश्वरवादियों या परलोकवादियों का ही कब्जा है। वैश्याएं पूजा-पाठ करके ही अपना धंधा प्रारंभ करती हैं। सट्टा सम्राटों को हमने नमाज पढ़ते देखा हैं। चोर, चोरी करने से पहले अपने ईश्वर को याद करते हैं। पशु की बलि हमेशा ईश्वर को ही याद करके ही दी जाती है। जो लोग शराब पीते हैं, वे पहले अपने देवी-देवता को याद करते हैं। जैसे जय माता दी ! जय भेरुबाबा!! कहकर पंडे तक शराबखोरी करते हैं। भांग और गांजा फूंकने वाले पहले शंकर जी की जय-जयकार करते हैं। गरीबी की आड़ में लोग सुंदरियों को गर्भवती बना देते हैं, धर्म की आड़ में व्याभिचार होता है।

धर्मगुरु अपने अनुयायियों को ठगने के लिए कई प्रकार के अंधविश्वास, कर्मकांड और रीति-रिवाजों का प्रचलन कर परलोक के भय की आड़ में अपना उल्लू सीधा करते हैं। सारी दुनिया के जितने भी राजा महाराजाओं, तानाशाहों, धनवानों एवं बलवानों का इतिहास उठाकर देख लो, सारे दुष्कर्मों में लिप्त मिलेंगे और यही आम आदमी को परलोक की आड़ में विद्रोह करने से रोकते हैं, इसीलिए धर्मगुरु, राजनेता और धनवान लोग आपस में सामंजस्य बिठाकर चलते हैं।

सारे शोषक ईश्वरवादी होने के बाजवूद गरीबों का खून चूसते हैं, जब गरीब या शोषित विद्रोह करता है तब उसे खत्म करने के लिए ईश्वर अवतार की कल्पना करते हैं। शोषक अपनी व्यवस्था को ईश्वरीय व्यवस्था कहता है। संसार के सारे शस्त्र, संपत्ति, सत्ता, सुरक्षा, सेना/ पुलिस, सम्मान, स्वास्थ्य और सेक्स पर कब्जा कर खुद गुलछर्रे उड़ाता है और शोषितों को भाग्य, भगवान और परलोक के झुनझुने

पकड़ा कर कहता है- **'बीसा बुद्धि तीसा धन, अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम। तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर ।'** समय से पहले और भाग्य से ज्यादा कुछ नहीं मिलना है।- **'देख परायी चुपड़ी मत ललचाए जी। रूखी-सूखी खाय के ठंडा पानी पी।'**

यदि हमारी नैतिकता, ईश्वर या परलोक के भय पर टिकी हुई है, तब इसका अर्थ हुआ कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से अनैतिक और बेईमान है। वह केवल नैतिकता का ढोंग रचे हुए है। यदि परलोक या ईश्वर का भय जाता रहेगा, तब वह अपने प्राकृतिक रूप में आ जाएगा।

जब देवताओं का राजा इंद्र स्वयं वेश बदलकर गौतम ऋषि की पत्नि अहिल्या से व्यभिचार करता है। ब्रह्माजी अपनी पुत्री सरस्वती को पत्नी बना लेते हैं। चंद्रमा गुरुपत्नि तारा को भगा ले जाते हैं और बुध नामक बच्चा पैदा कर देवी-दवताओं द्वारा समझाने पर ही तारा को वापस करते हैं। पांचों पांडव पांच बाप की संतान थे और माता की आज्ञा की आड़ में एक ही पत्नि द्रोपदी से बारी-बारी से रासलीला रचाते थे। वेदों में यमी अपने सगे भाई यम से कामुक संबंध बनाने का प्रयास करती है। हमारे सबसे बड़े तथाकथित भगवान विष्णु जी वेश बदलकर जलंधर राजा की पत्नी वृंदा से व्याभिचार करते हैं। फिर आप किस नैतिकता की बात करते हैं। वास्तव में शोषक नैतिकता की आड़ में परलोकवादी अंधविश्वास फैलाकर अपने शोषण चक्र को छिपाना चाहता है।

मैंने कहा- कुछ विद्वानों का कहना है कि संसार में अव्यवस्था ईश्वर ने जान बूझकर बनाई, ताकि इंसान की परीक्षा हो सके कि कौन उसे मुसीबत में रहकर भी याद करता है और कौन नहीं ? सभी लोग समान हो जाएंगे तो संसार कैसे चलेगा ? गरीबी, मुसीबतें व बीमारियों ने तो कई लोगों को सेवा करने का मौका देकर महापुरुष बना दिया है। गरीब नहीं रहेंगे तो गड्ढा कौन खोदेगा ? खेती कौन करेगा ? पशु कौन चराएगा ? दुनिया की अव्यवस्था इंसान की किस्मत का खेल है, आप संसार के दुखों को रोना जबरन रो रहे हैं ? और ईश्वर को नाहक दोष दे रहे हैं ?

जिज्ञासु- भला! ऐसा ईश्वर किस काम का, जो अपने को याद करवाने की गरज से लोगों पर मुसीबतों के पहाड़ गिराता रहे ? कथित ईश्वर को किस बात की कमी है, जो वह इंसान के गिड़गिड़ाने पर खुश होता है। कुछ लोगों को महापुरुष बनाने के चक्कर मानवता को पीड़ित देखना तथाकथित आस्तिकों की क्रूरता नहीं तो क्या है ? अब इंसान न गड्डा खोदेगा, न खेतों में हल चलाएगा, न पशुओं के पीछे मारा-मारा फिरेगा। मशीनें दुनिया भर में यह सब काम कर रही हैं और भविष्य में रोबोट यह सारे काम करेगा ? संसार में जितनी भी अव्यवस्थाएं हैं, अज्ञान है, गरीबी, बीमारी, अन्याय, अत्याचार हैं, उन सबके जिम्मेदार ईश्वरवादी हैं, क्योंकि वे हर मुसीबत को ईश्वर की देन, किस्मत का खेल या परलोक के लिए परीक्षा की घड़ी समझ कर मानवता को कुचले या घड़ी किए हुए हैं।

मैंने कहा- जिज्ञासु जी! इंसान एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहना है तो समाज के हिसाब से चलना पड़ेगा। यदि परलोकवाद झूठ है तब तो हमें सारे तीज-त्यौहार छोड़ने पड़ेंगे। यदि हम सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक रिवाजों को नहीं मानेंगे, तब समाज से कट जाएंगे ? समाज जैसा चल रहा है, वैसा चलने दो। इतना सोचने की फुरसत किसे है? अपना नौकरी धंधा करो, दो पैसे कमाओ, आराम से बीबी-बच्चे पालो, दुनिया जाए भाड़ में समाज की चिंता में कई महापुरुष शहीद हो गए हैं। समाज ने आज तक किस की बात सुनी है। आप ही बताइए।

जिज्ञासु- यदि समाज गलत सिद्धांतों व गलत नियमों पर आधारित है, तब हमें सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक क्रांति की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए।

आज गांव-गांव में पढ़े-लिखे लोग हैं, संचार के साधन हैं, टीवी, रेडियो, पत्र-पत्रिकाओं व मोबाइल इंटरनेट के माध्यम से एक पल में संसार में क्रांतिकारी साहित्य, विचार व विडियों का आदान-प्रदान किया जा सकता है। हमें सारे पौराणिक तीज-त्यौहारों एव रीति-रिवाजों में आग लगाकर ऐतिहासिक, वैज्ञानिक तथा समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं न्याय पर आधारित त्यौहारों व रीति-रिवाजों का निर्माण करना होगा। इसके लिए आप जैसे बुद्धिजीवियों को आगे आना होगा। आओ! हम सब मिलकर नए समाज का निर्माण करें, जिसका आधार मानवतावाद और बुद्धिवाद हो न कि परलोकवाद। जिसमें जाति, धर्म, नस्ल, संप्रदाय के भेदभाव के बिना खुला रक्त संबंध या शादियां हों, तभी हम एक नए समाज व नए विश्व का निर्माण कर सकते हैं।

मैंने कहा- जिज्ञासु जी! नए समाज के निर्माण का क्रांतिकारी कार्य तो आपको ही मुबारक हो। मुझे किसी से अपना सिर नहीं फुड़वाना है। आप तो मुझे यह बताइए कि यदि आत्मा-परमात्मा, देवी-देवता सब कल्पना हैं, फिर इंसान किसको माने और किसी पूजा आराधना करें ?

जिज्ञासु- अरे भोले भाई! यदि मानना ही है तो भौतिक, रसायन, जीवविज्ञान व मनोविज्ञान के नियमों एवं बुद्ध के पंचशील व मध्यममार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद आष्टांगिक मार्ग आदि सिद्धांतों को केवल मानो ही नहीं, जानो-समझो और जीवन में अंगीकार करो ताकि आत्मा-परमात्मा, परलोक, पुनर्जन्म, कर्मफल व चौरासी लाख योनियों के काल्पनिक भय से जीते जी मुक्ति प्राप्त कर सको और दूसरों को भी जीते जी मुक्ति, मोक्ष या निर्वाण का परमानंद प्रदान कर सको। किसी की पूजा-आराधना से आज तक इंसान को एक रुपये का भी लाभ नहीं हुआ है, फिर तुम क्यों पूजा-पाठ-प्रार्थना के चक्कर में घनचक्कर बने रहना चाहते हो ? सभी पौराणिक मिथकों से हमें छुटकारा पाना होगा और सभी ऐतिहासिक महापुरुषों का हमें सम्मान करना चाहिए ? उनके बताए मानवतावादी एवं बुद्धिवादी मार्ग का हमें अनुकरण करना चाहिए, न कि उनके चित्र या मूर्ति की भक्ति-आराधना के चक्कर में हम अपनी अनमोल जिंदगी में आग लगा दें। बुद्ध के 'अत्त दीपो भव' को अपना गुरुमंत्र बना लो, कहां पूजा-पाठ के चक्कर में पड़े हो? और इतना समझाने के बाद भी तुम 'ईश्वर के दलाल' बने हुए हो? हाय रे! अज्ञान।

मैंने कहा- यदि आपके अनुसार मैं 'ईश्वर का दलाल' हूं, तो क्या आप नास्तिकों के दलाल नहीं हो ?

जिज्ञासु- अरे भाई नास्तिक तो तुम हो, मैं तो आस्तिक हूं।

मैंने कहा- जब आप ईश्वर, आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म, कर्मफल शास्त्र आदि किसी को नहीं मानते हो, फिर भी आप आस्तिक और मैं सब कुछ मानते हुए भी नास्तिक, आप तो उल्टी गंगा बहा रहे हो ? बताओ मैं नास्तिक कैसे हुआ?

जिज्ञासु- जिन चीजों का अस्तित्व हो अर्थात जो है, उसमें विश्वास करें, वह आस्तिक और जिन चीजों का कहीं कोई अस्तित्व ही नहीं है, फिर भी उनमें विश्वास करें, वह नास्तिक। अब तुम ही सोच समझकर बताओ -कौन आस्तिक और कौन नास्तिक है ?

मैंने कहा- जिज्ञासु जी सच बताइए। आप आस्तिक है या नास्तिक ?

जिज्ञासु- भैया! मैं न आस्तिक हूं, न नास्तिक हूं, में तो जिज्ञासु हूं, सत्यशोधक हूं या वास्तविकता का पता लगाने की कोशिश करने में लगा हुआ सच्चा खोजी हूं, आस्तिकता और नास्तिकता को छोड़कर मैं तो सत्य और तथ्य की तलाश में जिज्ञासु बन कर जी रहा हूं।

मैंने कहा- सूरज तपने लगा है। बहुत लंबी चर्चा हो गई है। आपकी बातें बहुत अदभुत हैं, फिर भी कई शंकाओं का समाधान बाकि है। उनका बाद में समाधान करवाऊंगा। अगली मुलाकात फिर होगी, अच्छा सभी को प्रणाम।

जिज्ञासु जी ने साथियों सहित हमें प्रणाम कर विदा ली, किंतु जाते-जाते कह गए कि अगली मुलाकात में पूर्वाग्रह और दुराग्रह को घर पर ही रख आना और हमारी इन पंक्तियों पर चिंतन अवश्य करना -

आस्तिकता और नास्तिकता को छोड़कर।

पूर्वाग्रह और दुराग्रह के बंधनों को तोड़कर ॥

वास्तविकता की शरण में आ जाओ।

और जीते जी मुक्ति पा जाओ ॥

सत्य के दर्शन